पाइ अजोपि इन्हें असभाखै। तौ धरि हृदय कमल महँ राखै॥
जे कउ तिनहिं न देखन पावहिं। सुनि स्वरूपते पाछे धावहिं॥
दौरि निरखि छबि आनँद भरिकै। फिरहिं भवन शोभा उरधरिकै॥
अबलरहहिं कर मलि पछिताई। सुनि छबि हृदय न प्रेम समाई॥
सीता लषण सहित सुरनाहू। देत सबहिं मग लोचन लाहू॥
अति सुकुमार चले मग जाहीं। श्रमकण छाय रहे मुख माहीं॥
सहज सनेह पतिहिं ऋजु जानी। बूझत प्रभुहिं सीय मृदुबानी॥

सवैया॥ सिय पूँछति प्राणप्रियापति सों वह कानन केतिक दूरि अबै। प्रभु आपु पयान किये जहँको तजि सुन्दर भोग बिलास सबै॥ क्षण एक बिलम्ब करौ कतहूँ लकि पंथ परे तरु छाँह जबै। रज झारि बयारि सु कैमुख पै चलिहौं प्रभु आयसु पाय तबै॥ राजिवलोचन राम प्रभू पियके सुनि कोमल बैन सुहाये। आरत बन्धु कृपालय नेह सँभारत बारि बिलोचन छाये॥ प्रेम सों पोषि कह्यो अबहीं बन दूरि धरौ धृति भीरु सुभाये। यों भगवन्त बुझाय चितै पिय ओर चले मृग नैन लजाये॥

कछुक दूरि लखि छाँह गँभीरा। क्षणयकबिलँबि गये मतिधीरा॥
समाचार पुर लोगन पाये। तजि तजिकामधाम सबधाये॥
राम लषण सिय रूप निहारी। पाय नयनफल होहिं सुखारी॥
कहहिं धन्य ते पितु अरु माता। जिन जन्मे सुत ये सुखदाता॥
आजु धन्य बड़भाग हमारा। जो भरि नयनन इनहिं निहारा॥
मगवासी यहिविधि नरनारी। निरखिनिरखि सब होहिंसुखारी॥
तब तहँ राम भीर बड़ि जाना। पुनिउठिकीन्हे बिपिनपयाना॥
फिरे मुदित गृह लोग लुगाई। करत परस्पर राम बड़ाई॥

कुण्डलिया॥ आगे प्रभु पाछे लषण मध्य सीय सुख धाम।

ब्रह्म जीवके बीच में जनु माया अभिराम ॥ जनु माया अभिराम शिवाशिव गणपति कैधौं । कैसह शची जयंत चले सँग सुरपति लैधौं ॥ लैधौं सँग रति मैननाथ ऋतु जात सुभागे । सीता लषण समेत जात कैधौं प्रभु आगे ॥ गीतिका छन्द ॥ सिय राम पंथ चरित्र पावन मोद प्रद मंगलमहा । नहिं जात मुखयक बरणि सुख मै छाय बन मारग रहा ॥ सिय सहित सुन्दर पथिक द्वउ सत भाय जिन देखे भले । ते धन्य बिनु श्रम अगम भवभय पार दुख दारुण दले ॥ भगवन्त वह छवि अजहुँ जाके हृदय स्वप्नेहु आवई । श्री राम धाम सुजाय जो पथ कबहुँ कउ मुनि पावई ॥

दो० यहि प्रकार बिहरत बिपिन मग बासिन सुख देत ।
बाल्मीकि मुनि आश्रमहि आये कृपा निकेत ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रप्रतिनिषादवार्त्तापंथचरित्रप्रभुसीतालषणसहित बाल्मीकिमुनिआश्रमप्राप्तिवर्णनोनांषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

दो० भवनिधिअगमअपार कहँ सुगमनाव ज्यहि नाम ।
जनक सुता रघुनन्दनहि पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥
राम दीख मुनि आश्रमहि शोभा अमित अनूप ।
सीता लषण समेत अति पाये सुख सुरभूप ॥
सुनि रघुबर आगमन तब आये मिलन मुनीश ।
प्रभु प्रणाम कीन्ह्योनिरखि मुनिवर दीन अशीश ॥
अति सप्रेम मुनि रघुबरहि लीन्हे हृदय लगाय ।
निरखि राम मुख चन्द्र छवि हर्ष न हृदय समाय ॥
पुनि निज आश्रम लायकै बहुप्रकार सनमानि ।
कन्द मूल फल अशन हित दीन्हे मुनिवर आनि ॥
प्रभुसिय लषण समेत तब कन्द मूल फल खाय ।

भये मुदित मुनिराज तब दीन्हे आसन लाय ॥
तब करि संपुट करकमल बोले श्रीरघुराज।
आजु सुकृत मम सफल तव दर्शन ते मुनिराज ॥
वर्ष चतुर्दश मोहिं प्रभु दीन पिता बनवास।
सो अब सुथल बताइये जहँ मैं करौं निवास ॥
सुनि मुनि रघुपति वचन मृदु बोले बचन सहेतु।
कसन कहौ तुम राम अस कृतपालन श्रुतिसेतु ॥
तव चरित्र अद्भुत अमित अद्भुत रूप तुम्हार।
अनुपम अलख अनादि ज्यहि वेद न पावतपार ॥
विधि हरिशंकर कौतुकी कौतुक जक्त अपार।
त्रिभुवन पति रघुबंश मणि त्यहि तुम देखनहार ॥
तेऊ निज बल बुद्धि तव मर्म सकैं नहिं पाय।
जानै सो भगवन्त वह ज्यहि तुम देहु जनाय ॥
तुम कहँ जानै जान सों तुमहीं सम ह्वैजाय।
ज्यों मलया सँग काष्ठ लहि होत मलय सुखदाय ॥
ते तुम सुरमुनि संतहित लागि धरेउ नररूप।
जड़ मोहन सज्जन सुखद करहु सुचरित अनूप ॥
पूछेउ म्वहिं निज रहन हित कहउँ सुनहुँ सो ठाम।
जहाँ लषण सीता सहित बसहु सदा श्रीराम ॥

छंद त्रोटक ॥ जिनके श्रुति सिंधु समान परे। यशपावन तौं सरिजालभरे ॥ कबहूँ परसो नहिं पूरभरौ। तिनके हृदि मंदिर रूर करौ ॥ युग लोचन चातृक जे सुकिये। धृत दर्शन बारिद चाह हिये ॥ सरिसागर बारि सुनिंदत जे। लहि बिंदु स्वरूप अनंदित जे॥ तिनके हृदिवेस्मि प्रकाशभरौ। सिय सानुज राम निवास करौ ॥

जिनके मन मान न मोह मदा। तिनके मन धाम करौ सुसदा॥ प्रिय संत अनंत जिन्हैं नितही। सम पेखत जे सु हिताहितही॥ नित भोजन आपु उछिष्टकरै। पटभूषण अर्पि तुम्हें सुधरै॥ शिर नावहिं देखि सु विप्रगुरे। करिये तिनके शुभथान उरे॥ पदतीर्थ पयान करैं जिनके। मन मंदिर रामबसौ तिनके॥ करहीकर पूजन राम सदा। तजि आपु भरोस न आन यदा॥ तुमतेधिक जानि गुरे सुहृदै। सनमानि सुसेवन कृत्य सदै॥ जननी सम जे परनारि तकैं। बदबैन सुसत्य वृथा न बकैं॥ बच मानस कर्म सदै जिनके। गति तौ उरराम बसौ तिनके॥

दो॰ सबप्रकार ज्यहि आपु सों मन बच कर्म सनेह।
राम लषण सीता सहित करहु तासु उरगेह॥
यहि प्रकार मुनि राम कहँ बहुत बताये ऐन।
पुनि सप्रेम श्रीरामसन बोले मुनि मृदुबैन॥
सुनहुराम अब कहउँ मैं आश्रम समै समान।
चित्रकूट गिरि सुखद अति करहु तहाँ शुभथान॥
अत्रि आदि मुनिवर जहाँ बसि तप करहिं अपार।
पावन सरि कानन सुभग फल बाँछित दातार॥
भलेहि नाथ कहि मुदित मन सीय सहित द्वउभाय।
चले तुरत पै सरितबर कीन्हे मज्जन आय॥

छन्द॥ चित्रकूट कियवास राम मुनि देवन पाये। धरि धरि कोल किरात वेष तहवाँ सब आये॥ रचे परण तृणशाल सुभग युग बरणि न जाहीं। सीता लषण समेत राम राजत तिन माँहीं॥ जनुरति ऋतुपति मदन युत मुदित बिपिन बसि तप करत। भगवन्त कहै किमि समय सुख चित्रकूट आनँद भरत॥ रोलाछंद॥ बरषि सुमन

सुरवृन्द हरषि जे जै बहुभाखी। गमने निज निज धाम हृदय सिय रामहिंराखी॥ समाचार सुनि सकल अत्रि आदिक मुनिवृन्दा।आये तहँ सानँद सुछबि देखन सुखकन्दा॥ प्रभु प्रणाम उठि कीन दीन आशिष सब काहू।राम लषण सियरूप निरखि लहि लोचनलाहू॥ भये मुदित मुनिवृन्द राम बहु बिधि सनमानी। किये विदा सानंद सब कहि कहि मृदुबानी॥ सुनि रघुबर आगमन मुदित सब कोल किराता। कन्द मूल फल भूरि चले लै भरिभरि पाता॥ आये तहँ सानंद भेंट दै प्रभुहिं जुहारी। निरखि निरखि सियराम रूप छवि होहिं सुखारी॥ जानि प्रीति बहु भांति तिनहिं रघुपति सनमानी। प्रभु प्रसन्न अवलोकि कहैं सादर मृदुबानी॥ सवैया॥ नाथ सनाथ भये सबहैं हम आपु सुपङ्कज पांय निहारे। कोशलनाथ कृपालत-व.गमना जु भये बड़ भाग हमारे॥ बास कियो भल जानि यहाँ रहबै सब काल सुआपु सुखारे। नाथ न आयसु देत सक्यो हमसे-वकहैं सकुटुम्ब तुम्हारे॥

दो० सुनि सप्रेम तिनके बचन रघुपति राजिवनैन।
परितोषे बहुबिधि सबहिं कहि सप्रेम मृदु बैन॥
बिदा किये पुनि सबहिं प्रभु चले नाय पद माथ।
आये निज निज भवन सब कहत रामगुण गाथ॥
यहिप्रकार कानन सुभग सिय समेत द्वउ भाय।
बसहिं परम आनंदयुत सुर नर मुनि सुखदाय॥

सवैया॥ जादिन ते करुणा करिकै सिय संयुत राम बसे बन आई। तादिन ते सब जीव सुखी अति होत भयो बन मंगलदाई॥ आनँद पूरि रह्यो सब ठाम सुजाहिं जहाँ जहँ दूनहुँ भाई। क्यों भ-गवन्त बखान करौं वहि कानन जाल रह्यो छविछाई॥

सोहहिं अतिवृक्षनकी पांती। फल प्रसून पल्लव बहु भांती॥
ललित लतान बितान सुहाये। बिहँगवृन्द तिन महँ छबिछाये॥
शीतल मंद सुगन्ध बयारी। चलत सुभाय ताप त्रयहारी॥
फूले सरन सरोज अपारा। अलिगण करहिं मुदित गुंजारा॥
खग अनेक बहु बानी बोलैं। सुनत सुख मन धीर न डोलैं॥
करि हरि कपि वृक कोल कुरंगा। बैर बिहाइ फिरहिं यकसंगा॥
राम कृपा भय काहुहिं नाहीं। सुखी सकल बनचर बनमाहीं॥
कहौं प्रभाव बहुत किमि गाई। जहँ बास कीन्ह्यो प्रभु आई॥

दो॰ गिरि कानन सर सरित बर जावत त्रिभुवन माहि।
चित्रकूट के भागको सब मन रहे सराहि॥

यहि विधि सीयसहित द्वउभाई। बसहिंबिपिन त्रिभुवनसुखदाई॥
मन बच कर्म जानि निजदेवहिं। लषण राम पद पंकज सेवहिं॥
सुखी परम प्रभु सँग बैदेही। करत न सुरति मातु पितुकेही॥
कहहिं राम बहु कथा पुनीता। सादर सुनहिं लषण अरुसीता॥

दो॰ चित्रकूट यहि बिधि सुभग सिय समेत द्वउ भाय।
परणशाल राजहिं मुदित शोभा कहि नहिं जाय॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहनम्बरदारबमात्मजभगवन्तसिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रचित्रकूटविलासवर्णनोनांसप्तमोध्यायः ७॥

दो॰ बरदायक बरदायकन बरदायक सुखधाम।
जनकसुता रघुवीरपद शिरधरि करौं प्रणाम॥
चित्रकूट ज्यहिविधि रहे सियसमेत द्वउभाय।
सो चरित्र पावनपरम कह्यों कछुक मैं गाय॥
अब सुमन्त ज्यहिविधिगयो फेरि अवध दुखमानि।
सो चरित्र संक्षेप मैं सादर कहौं बखानि॥

रोलाछन्द ॥ जबटयो प्रभुहि पठाय भवन निज जबहि निषादा। देख्यो सचिवहि आय परे महि बिकल बिषादा ॥ रटत राम सिय राम देखि दुखभयो निषादे। समुझाये बहुभाँति सचिव अब तजहु बिषादे ॥ बहुप्रकारदै धीर यान बरबस बैठाई। रामबिरह दुखदीन सचिव रथहाँकि न जाई ॥ चलत न हय हिहिनात बिकल दिशि दक्षिणदखा। बाजिदशा अवलोकि भयो दुख गुहहिं बिशेषी ॥

दो० तब दीन्हे करि साथ निज सेवक चारि बुलाय।
हाँकि रथहि ते अवधपुर चले सुमन्त ल्यवाय ॥
बहुविधि शोच सुमन्तउर करमींजै पछिताय।
रामहि बिपिन पठाय पुर जाव कवन मुहलाय ॥
पंचरचित यह अधमतनु आखिर रहि न निदान।
कस न लहेउ जग सुयशवर बिछुरत श्रीभगवान ॥
पुरजन मोहिं बिलोकि जब धायपूछिहैं आय।
काह कहब मैं तिनहिं तब आयों बिपिन पठाय ॥

सवैया ॥ मातुसबै दुखदीन महा अवलोकि हमैं पुछिहैं जबआई ॥ कौन सुआननते कहबै तब कौन सँदेश तिन्हे सुखदाई ॥ आयउँ मैं कुशलात घरै बन सानुज राम ससीय पठाई। पूँछिहि जो त्यहि उत्तरदेब सुलेब यही यश औधहि जाई ॥

दो० पूँछिहि मोहिं बिलोकि जब राउ महादुख दीन।
कहिहौं का तब जासुकर जिवन रामआधीन ॥

सो० यहिविधि करत बिषाद तमसातट आयो तुरत।
कीन्हे विदा निषाद फिरे पायँपरि मन दुखित ॥

सवैया ॥ बसहानि गलानि सुमन्त महा सकुचै पुर पैठत माहिं हिये। कहिजाय न तासु दशातनकी जनु ब्राह्मण गोवध जाल

किये ॥ तरुकेतर बैठि बितायदिनै भइ साँझ सुऔसर जानिलिये।
भगवन्त घरीयुग रातिगये चुपके रथलै पुरपाँवदिये ॥

दो० माधव कृष्ण सुबाण तिथि गये निशारधयाम।
आय राखि रथ द्वार नृप रह्योजाइ छपि धाम ॥
समाचार पुरजन सुनत धाये भूपति द्वार।
रामरहित अवलोकि रथ भय सब बिकल अपार ॥

सुनि सुमन्त आगमन अवासू। भइँ सब बिकल परम रनिवासू॥
लाग्यो भवन भयानक कैसे। प्रेत निवास करत जहँ तैसे ॥
बिकल सकल त्यहि पूँछै लीन्हा। सचिव शोकवश उतर न दीन्हा॥
पुनि सुमंत भूपति पहँ गयऊ। नृपगतिदेखिअधिकदुखभयऊ ॥

दो० राम बिरह ब्याकुलनृपति पस्योधरणि यहिभांति।
सुरपुर ते जनु भूमि पै खसि नृप पस्यो ययाति ॥

नृप ययाति कै गति भै जैसी। करि संक्षेप कहौं कछु तैसी॥
यकसै एक यज्ञ उन कीन्हा। यही देह सुरपुर लै लीन्हा॥
तब हरि निजदुख गुरुहिं सुनाये। सुनत बृहस्पति युक्ति बताये ॥
धरि द्विज रूप शक्र तहँ गयऊ। नृप ययाति ते बूझत भयऊ ॥
आपु कौन का पुण्य अपारा। ज्यहिसदेह यहि लोकसिधारा ॥
सुनि ययाति मुख बरणय लीना। तुरतहिं पुण्य भई सब क्षीना ॥
पुण्यहीन महि गिस्यो ययाती। नृपदशरथगति भै त्यहिभांती ॥

दो० भूप मनोरथ अमरपद भूमि मनोरथ बाम।
बरणन करि मुख धर्म निज पस्यो भूमि परिणाम ॥

जाय सुमंत चरण शिरनावा। देखि भूप उठि हृदय लगावा ॥
अतिसनेह पूँछत नृपतेही। कहु सुमंत कहँ रामसनेही ॥
कहाँ लषण कहँ सिय सुकुमारी। पूँछत राउ नयन भरिबारी ॥

सखा कुशल कहु रघुपति केरी। गये बनहिं की आन्यहु फेरी॥
कहिनि सँदेश सम कछु तोहीं। सपदिसुनाउ सचिव सो मोहीं॥
राजदेन कहि बनहिं पठाये। हरष बिषाद न कछु मन लाये॥
अस सुत गये रहे जो प्राना। तौ म्वहिंसम को पापनिधाना॥
बेगि सखा स्वइ करहु उपाई। राम लषण सिय देहि देखाई॥

सवैया॥ धारि सुधीर सुमंत हृदै नृप सों करजोरि कह्यो मृदु बानी। राजशिरोमणि चक्रवर्ती तुम धीर धुरन्धर पण्डितज्ञानी॥ सेवहु साधु समाज सदा नृप कीरति पावन तौ जगभानी। त्यों भगवन्त बिचारि हिये नृप धीर धरौ समया अनुमानी॥

दो॰ जन्ममरण बिछुरन मिलन हानि लाभ सुखशोग।
नाथ होत सब साथही कहत वेद बुध लोग॥

असनृप समुझि शोक परिहरहू। समय बिचारि सु धीरज धरहू॥
प्रथम कीन तमसातट बासा। दुसरे दिन गय सुरसरिपासा॥
तिसरे दिन उठि होत सकारे। लय बट पय शिर जटा सँवारे॥
सीता लषण सहित रघुबीरा। चढ़ेनाव लखि मोहिं अधीरा॥

चौपैया छंद॥ लखि मोहिं अधीरा धरि उरधीरा कह्यो वचन रघुराई। पितुसन हुतिमोरी तुम करजोरी करब विनय शिरनाई॥ चिंता म्मलाई करिय न राई म्वहिंमुद कृपा तुम्हारी। आयसु प्रतिपाली फिरिहौं हाली तजि अशोच सुखकारी॥ जननिन समुझाई धीर धराई बिनय भाँति बहुकीन्ह्यो। गुरुसन पुनिजाई पद शिरनाई कहिं सँदेश यह दीन्ह्यो॥ स्वइ करब उपाई ज्यहि दुखराई मम लगि तात न पावैं। पुनि कहब सुजाई यह समुझाई भरत नगर जब आवैं। लहि राज अनूपा बर पदभूपा तजब नीति नहिं भाई। परजहि प्रतिपाल्यो अनय न चाल्यो सेयहु सम सब भाई॥

यहिविधि रघुनायक जनसुखदायक कह्यो मोहिं समुझाई। केवट तबपाई रुख रघुराई पारहि नावचलाई॥
यहिविधि राम लषण सियसंगा। चले नावचढ़ि पारहि गंगा॥
मैं लखि नैन जियत फिरिआयो। म्वहिंसम पापवन्तको जायो॥
सुनतपर्‌यो महिबिकलभुवालू। मणिबिहीनजिमिब्याकुलब्यालू॥
समयशोक किमिकहौं बखानी। सुमिरि सुमिरि सबरोवहिं रानी॥

दो० राममातु धरिधीर उर बोली बचन गँभीर।
नाथधरिय मनधीर तौ फिरि मिलिहैं रघुवीर॥

सुनि नृप चितयो आँखि उघारी। तलफत मीनलह्यो जनुवारी॥
उठे बोलि कहँ राम हमारे। कहँ सीता कहँ लक्षिमण प्यारे॥
वारबार इमि कहि नरनाहू। भयो अधिक उर दारुणदाहू॥
त्यहि अवसरकर शोकअपारा। को असधीर जो वरणैपारा॥

दो० अन्धीअन्धा शापकी तब सुधि हृदयसुकीन।
कौशल्यासन हाल सो सब नृप वरणय लीन॥

तापसान्ध अन्धी विख्याता। सरवन के ते हैं पितुमाता॥
सरवन तिनहिं तृषितजियजानी। सरयूतट गय आनन पानी॥
बोरयो जबहिं कमण्डल जाई। सो रव कछुक भूप सुनिपाई॥
चीन्ह्योनहिं निशि नृपकरिजाना। त्यहि भ्रमते नृपमार्‌यो बाना॥
लागत शर सरवन मरिगयऊ। तबतिन नृपहि शापअसदयऊ॥
हमहिं शोक दीन्ह्यो सो पैहौ। पुत्रबिरह तुमहूं मरिजैहौ॥
इति इतिहास भूप सुधिआनी। कौशल्यासन कह्यो बखानी॥
बहुत बढ़ाय कह्यों मैं नाहीं। बिदित कथा अध्यातम माहीं॥
यह अपराध बहुत मैं कीन्हा। उदय पाप सोई अब चीन्हा॥
कहि अस बिकलपर्‌यो नरनाथा। धृक धृक जीवन बिनु रघुनाथा॥

हाय हाय कहि कहि सियरामा। तनु तजिगयो भूप सुरधामा॥
दो० लखि लागीं रोवन सकल रानी हति शिरपानि।
भूपरूप गुण तेज बल शील सुभाव बखानि॥
बिलपहिं दासी दास सब पुरजन परिजन लोग।
पर्यो रुदन घरघर अवध भूपमरणके शोग॥
होत प्रात मुनिआयकै सबकर शोक मिटाय।
नृपतनु राखि सुयानकरि लीन्हे दूत बुलाय॥
कह्यो बेगि तुम जायकै लावहु भरतहि बोलि।
भूपमरणकर हाल यह कह्यो कतहुँ जनि खोलि॥
यहै कह्यो पठये तुमहिं गुरुबुलाय द्वउभाय।
सुनि मुनिवरके बचनबर चले दूत तुर धाय॥
पहुँचे दूत भरत पहँ जाई। गुरुनिदेश सुनि दूनौ भाई॥
गमने तुरत शोच अधिकाई। पुरसमीप पहुँचे जब आई॥
लगेहोन अशकुन बहुभाँती। खर शृगाल रवकरहिं कुभाँती॥
मिलहिंलोगकछुकुशलनकहहीं। करि प्रणाम निजमारगगहहीं॥
केकयसुता सुन्यो सुत आवत। उठी तुरत उर चाव बढ़ावत॥
सवैया॥ केकयनंदिनि मंद महासुत आवत जानि उठीहरषाई। कंचनथार सवाँरि सुआरति मंगल बस्तु भरे समुदाई॥ द्वारहि आय मिली भरतै करि आरति पुंज प्रमोद बढ़ाई। त्यों भगवन्त सुभेंटि भली बिधि बारहिंबार सुमंदिरलाई॥
दो० भरत दुखित परिवार लखि लहत न मनमें चैन।
सुतहि सशोच बिलोकि तब बोली केकइ बैन॥
बन्धुछन्द॥ पूँछति केकइ पुत्रहि बाता। खैरि अहै मम नैहर ताता॥ भरत सबै कहि खैरि सुनाई। बूझेउ फेरि इहाँ कुशलाई॥

मुक्तकदामछन्द ॥ कहाँ कहु बेगि अहै मम तात। कहाँ कहु मातु सबै कुशलात ॥ कहाँ कहु राम सिया सुखदाय। कहाँ कहु लक्ष्मण प्रीतम भाय ॥ कमलछन्द ॥ सुनत सुवन बयन। ठन्यसि कुमति फयन ॥ सारूछन्द ॥ नैन नीर ढारि। बोलि चैन मारि ॥

कवित्त ॥ राज काज साज सब सहित कुशल क्षेम सकल प्रकार तात बात मैं सँवारयऊं। भई है सहाय मम मंथरा परमपीव देखि जो नशात काज आपने सँभारयऊं ॥ मांगि राज हेत तव कंटक उखारि सब थेरिक सिवात बिधि बीचहीं बिगारयऊ। पाये न बिलोकन महीप पुत्र राज तत्र त्यागि तनु आप सुरलोकही सिधारयऊ ॥ सुनत भरत भये सानुज बिकल भूरि परेमहि मुर्छित सँभारना सुगातहीं। तलफत मीन जनु पीन बिनु दीन अति हाय हाय हाय कहि रहे टेरि तातहीं ॥ गयो सौंपि रामही न तात गहि पाणि मोहिं पायों मैं न देखन नयन तोहिं जातही। भाग्यवन्त धारि उर धीरज सँभारि उठि पूंछत सप्रेम बारबार पुनि मातही ॥ तोमरछन्द ॥ क्यहि हेतु गे मरि तात। म्वहिं बेगि सो कहु मात ॥ सुनि भरतके इमि बैन। कह मन्दधी दुख दैन ॥

दो० देवासुर संग्राम ते त्यहि दिन लगे जुकीन।
सो करनी सबआपनी कुटिल कुमति कहि दीन ॥

गीतिकाछन्द ॥ सुनि राम सिय बन गमन भरतहि बिसरि पितु मरिबो गयो। गिरि परेउ मुर्छित भूमि तलफत हृदय दुख दारुण भयो ॥ म्वहिं लागि सब सुख त्यागि निज सिय राम बन मारग गहे। अनुमानि मन सब हेतु आपन थकित धरि मौनहि रहे ॥ मोदकछन्द ॥ ब्याकुल देखि सुतै समुभावत। मानहुँ लोन जरेम लगावत ॥ तात महीप न शोचन योगहि। पुण्य बिढ़ै फल कीन्हेउ

भोगहि ॥ सवैया ॥ जग रीतिहै जीवन मृत्यु सदा त्यहिते नृप लागि न शोच धरौ। नहिं होतहै आपन कीन कछू सुत होत स्वई जुबिरश्चि करौ ॥ भगवन्त हिये अनुमानि यही धरि धीरज शोच तजौ सगरौ। ससमाज नृपायसु राज करौ सुप्रजा परिवारक शोक हरौ ॥ रथोद्धताछन्द ॥ राज कीजिय सु यों जबै कह्यो। सो सुने भरतको हृदै दह्यो॥ भेति व्याकुल सँभार ना रही। फेरि धारि धृति बैन यों कही ॥ कवित्त ॥ जो पै तव चित्त बीच रही यों कुमति नीच दीन्हे क्यों न मीचु मोहिं जन्मतहि बाव्री। दीये कुल नाश करि एकही सुवार तयँ पस्यो सूझि काह तोहिं कीन्हे जो कुदाँवरी ॥ कीन्हेसि तु ऐस जैस करी है न कोई जग पापिनि प्रतीति तोरि कीन्ही किमि रावरी। ऐसो बर मांगते खसी न महि जीह तव परे कृमि मुख मैंन भयो उर घावरी ॥ सवैया ॥ हरि बुद्धि लई बिधि अंत समय नृप बात न लीन बिचारि हिये। रघुनंदनसे सुत जाहि बनै इति बैनत्वया ज्यहि कान किये ॥ अब तोहिं कहौं बहु भांति कहा तैं तौ सब काज बनाय लिये। बन लच्मण राम ससीय पठे पति मारि हमै चहै राज दिये ॥ मारत नाँह न नेकु डरी बर मांगि बनै सियराम पठाई। कौन सों प्रेत पिशाचिनि है कहँकी नृप बामभई अब आई॥ जो त्वहिं राम अहित्त लगे कहु सत्य कठोर हिये दुख- दाई। जोहसि सोहसि मूँदि मुखै उठि आँखिन ओट तु बैठहि जाई॥

दो॰ त्यहि अवसर कुबरी तहाँ आई सजि सब गात।
लखि सक्रोध उठि शत्रुहन हनि मारी यकलात ॥

कवित्त ॥ लागत चरण चोट गिरी सो धरनि जाय कूबर गो टूटि फूटि फाटि गो कपारहै। गये मुख टूटि दंत दलित अधर बीच खंडित सुजीह जोर चली रक्त धारहै ॥ हाय हाय हाय कहि सेवत

पुकारि दैव करत सुनीक फल पायों मैं ब्यकारहै। सुनि शत्रु आरि धारि केशन घसीटिपीटि डारी तन तासु करि दुर्गति अपारहै॥

दो० भरत दयानिधि देखि तब दीन्हें ताहि छोड़ाय॥
कौशल्या के भवन पुनि आये चलि द्वउ भाय॥

पंकज बाटिका छन्द॥ राम जननि गति जाय लख्यो जब। शोक बिकल द्वउ भाय भये तब॥ सवैया॥ पहिने पट अंग मलीन महा बपु गौर अतीव सुश्याम भयो। कृशगात गयो रहि अस्ति मई हत श्रीमुख जाल उदासि छयो॥ दुखभार सँभार न कारिसकै रघुबीर बियोग त्रिताप तयो। जनु कल्पलता बर कानन में छबि छाय रही सुतुषार हयो॥

राम मातु जब भरतहिं देखी। उर उपजा अनुराग विशेखी॥
लगी उठन महि गिरी झँवाई। भरतहिं देखि बहुरि उठिधाई॥
पुनि गिरि परी अजिर महँमाता। निरखि रोय दीन्हे द्वउ भ्राता॥
भरत उठाय चरण शिर नाये। तबहिं मातु गहि हृदयलगाये॥
नयनन नीर भरे द्वउ भाई। समय बिषाद बरणिनहिं जाई॥
कौशल्या तब धीरज लाई। बहु प्रकार भरतहिं समुझाई॥
अँचल आंसु पोंछि पुनि रानी। कहत भरत सों इमि मृदुबानी॥
तुम बिन तात मोर यह हाला। उठि न सकौं तनुपरमबिहाला॥
राम लषण सिय बनहिंसिधाये। करिमुनि वेष पयादेहिं पाँये॥
राम बिरह भूपति तनु त्यागी। सुरपुर गयो आपु बड़ भागी॥
में न गइउँ सँग तज्यउँ न प्राना। को पापिनि जग मोहिंसमाना॥
मातु बचन सुनि भरत सभाई। भये बिकल तन दशा भुलाई॥
रोवहिं बिकल सकल रनिवासू। कहि न जाय जसभयो हरासू॥
बोले भरत धीर धरि बाता। बृथाजगत जनम्योंम्वहिंमाता॥

सवैया॥ केकइ क्यों जनमी जगमांझ महादुखदाइनि पापमई है। जोपय सो जनमी जगआनि तु काह्यन ह्वै निज बांझगई है॥ बंश कलंकित द्रोहमई अघरूप जु जन्मत मोहिंभई है। जोपि रहै करिबो असताहि तो काहेन डारयसि होत हई है॥ मोसमको जग पापमई ज्यहि लागिभई गति तौ असिमाई। तात पयान किये सुर लोक ससीयगये बन दूनहुँ भाई॥ केवल मैंहिं अनर्थक मूलसबै उतपात भयो म्बहिं लाई। जन्म बृथा जग मोर भयो ज्यहि लागि सबै दुख दारुण पाई॥

दो० धिक धिक उदधि अभाग मैं औगुण अयश अगार।
ममपाछे सियराम बन सहिहैं बिपति अपार॥

सुनि मृदु बचन राम महतारी। बोली हृदय धीर धरि भारी॥
तात जाउँ बलि समय बिचारी। धीरज धरहु धीर धुरधारी॥
मोर अभाग न काहुहि दोषू। तात मातपर करिय न रोषू॥
होनहार सुत जो कछु रहेऊ। कालपाय सब होत सो भयऊ॥
भयउ बाम बिधि उदय अभागू। तात सकल मम कर्मन लागू॥
सुनि दुखभरी मातु मुख बानी। कहत भरतकरि सम्पुट पानी॥

दो० जो अघमारे मातु पितु गाय बिप्र गुरु होय।
मातु मोर मत होय तौ देवै बिधि म्बहिं सोय॥

रोला छन्द॥ जे मारैं शिशु बामगाँव बन आगि लगावैं। चलैं वेद प्रतिकूल साधु सुरसंत सतावैं॥ जेहरि हरपद त्यागि भजें नित भूत पिशाचा। नहिं सुहाय हरि सुयश कहैं मुख सत्य न बाचा॥ बिषदै मारैं मित्र भूपउर दया न आनै। कपटी कुटिल कलाप पाप पर बदन बखानै॥ तिनहिं पाप जो होइ देउसो मोहिं बिधाता॥ मत हमार लवलेश होय जो यामें माता॥ जे निन्दक श्रुति शास्त्र

भेद हरिजनमें लावत । परधन परतिय काज लाज तजि निशि दिन धावत ॥ देहिं बिप्र गुरु शोक मातु पितु चरण न सेवैं । करैं न तीरथ बर्त बिनाहरि अर्पण जेवैं ॥ लोभी लम्पट चोर मांस मदिरा जे खाहीं । नितउठि ठानैं रारि साधुसंगति नहिं जाहीं ॥ होय तिनहिं जो पाप देउ मोकहँ बिधि सोई । जो जननी यहि माहिं मोर तनकौ मत होई ॥

दो० कर्म बचन मन छाँड़ि छल जिनहिं न हरिपद नेहु ।
तिनकै गति म्वहिं देहु विधि जो जानौं मत येहु ॥

गीतिका छन्द ॥ सुनि भरतके इमि बैन मृदु शुचि सरल सुठि सांचे सदै । भरि नीर नैनन जननि पुनि पुनि कहत धरि धीरज हृदै ॥ तुम तात करिय न शपथ तुम कहँ प्राणसम प्रिय रामहैं । रघुबरहिं तुम प्रिय प्राणसम सुत कोउकाहु न खामहैं ॥

दो० मातुमते मत ताततव कहै जो लघु मति कोइ ।
शुभगति सुयश सुधर्म सुख स्वप्नेहुँ लहै न सोइ ॥

छन्द ॥ कहि बचन अस पुनि मातु भरतहिं पाणि गहिउर लायऊ । अनुरागबश सुत स्रवतथनपय नीर नैनन छायऊ ॥ यहि भाँति बिलपत रैनि बीती प्रात मुनिवर आयऊ। उपदेश बहु बिधि देइ भरतहि सबन धीर धरायऊ ॥

दो० गुरु बशिष्ठ आयसु भरत उठे करन पितु काज ।
बोलि सचिव सेवक अनुज कह्यो सजहु सबसाज ॥

छंद ॥ तब वेद रीति न्हवाय नृप तनु बिबिध गंध लगायकै । सुन्दर बिमान बनाय सजि त्यहि माहिं नृप पौढ़ायकै ॥ करि बिनय राखीं मातु सब पुनि सरयुतीरहि ल्यायकै । चंदन अगर बहु भार आये अमित गंध मँगायकै ॥ बिरचे चिता भलि भाँति जनु

सोपान स्वर्ग सुहावनी। यहि भाँति कीन्हीं दाह क्रिय तहँ भरत सब मनभावनी॥

दो० अवध पूर्व चौकोश पै घाट बिल्व हरि जानि।
तहँ अदग्ध महि शोधिकै दाह क्रिया किय आनि॥

छप्पै॥ दाह क्रिया करि सकल न्हाय तिलअंजलि दीन्हें। शोधि सुमृति श्रुति शास्त्र सबिधि दशगात्रहि कीन्हें॥ भय बिशुद्ध बहुभाँति बोलि बिप्रन दिय दाना। धेनु वाजि गज अन्न बसन भूषण धननाना॥ बहुभाँति द्विजन सनमान करि दिये दान अभिलाखसों। पितु हेत भरत करनी जुकिय कहि न जाय मुखलाख सों॥ बरवैछंद॥ माधव शुक्ल पंचमी चंदसुवार। जानि सुदिन मुनि गये भूप दरबार॥ पुरजन परिजन सचिवन सकल बुलाय। राजसभा महँ बैठे सब मिलि जाय॥ तब तहँ पठये बोलि भरत द्वउभाय। आवत भये तुरत गुरु आयसु पाय॥ निज समीप बैठारे मुनि गहिपानि। पुनि बुलाय मुनि पठई तहँ सब रानि॥

दो० तब बशिष्ठ मुनि भरतसन सावकाश सब जानि।
धर्मनीति मैं बचन मृदु कहत प्रेम रससानि॥
कही प्रथम मुनि केकई कीन जो कठिन कुदाव।
राम लषण सिय पठय बन दीन्हेसि सबहि कुघाव॥
पुनि नृप सत्य सुधर्म ब्रत कीन मुनीश बखान।
ज्यहिं निबाहि निज प्रेम प्रण तृण सम त्यागे प्रान॥

सवैया॥ शोच न कीजिय भूप हितै ज्यहिं आपन पूरण प्रेम कियो है। राम बियोग कृशानु महा तृण सों धरि जो निज प्राण दियो है॥ भोग बिलास कलाप किये लखि जाहि सिहात सुरेश हियो है। त्यों भगवन्त रह्यो यशछाय मनो शशि शर्द प्रकाश

वियो है ॥ कवित्त ॥ शोचिय महीप सो न नीति में प्रवीन जौन शोचिये सो विप्र जाहि वेदको न ज्ञानहै । शोचिय सो वैश्य धन-वान है कृपण जौन शोचिये सो शूद्रकार विप्र अपमानहै ॥ शो-चिय सो नारि पतिवंचक कुटिल जौन शोचिये सो बटु तजि व्रत रत आनहै । भाग्यवन्त सोई सब भाँति है सुशोचनीय जाके नहिं प्रान प्रीव भक्ति भगवानहै ॥ सवैया ॥ शोचइ योग न कोशलराउ सुजासु प्रभाव तिहूँपुरछायो । जा गुनगाथ बखानकरैं हरि शंकर ब्रह्म पुराननगायो ॥ तात पिता जस आपु भये तस है नहिं होन न ह्वैकहुँ आयो । त्यों भगवन्त सुभागबली अवधेशसमान नहीं कोउजायो ॥

दो० ताते तात न कीजिये शोच कछू मन माहिं ।
होनहार जो होत है होत टरै सो नाहिं ॥

॥ सवैया ॥ केकइ क्रूर कठोरमहा त्यहि काहकहौं नहिं जात कही है । लाय कुबुद्धिमई पुर आगि प्रचंड सबै नर नारि दही है ॥ सानुज सीय पठैबन राम कलंक बिधौ पन आपु लही है । त्यों भगवंत न जाय कही बिधिकी बिधिताति कठोरसही है ॥ राम स्वभाव न जाय कह्यो पितु आयसु जेतजि भूषणसारे । बल्कल चीर सँवारि तुरंत उठे कछु मानस खेद न धारे ॥ बारहिं बार बुझायसबै पितु पंकज पायँ पुनीत जुहारे । धर्म्म धुरन्धर धीरनि लै पितु आयसु कानन राम सिधारे ॥

दो० सुनहु भरत भूपहि बचन प्रिया न प्रिय निजप्रान ।
ताते तात सुकीजिये ताके बचन प्रमान ॥

रोलाछंद ॥ ज्यहि रघुबर हित लागि तजे तृणसम निजप्राना । करहु तासुकुर बैन धर्म्म इति वेद बखाना ॥ तुमहिं राज नृप दीन ताहि कीजे सुखमानी । यहिसम धर्म न आन पुत्र पालै पितुबानी ॥

दो० . परशुराम पितु शासनहिं कीन्हे बध निज मात ।

तिनको यशपावन विशद जग सब बरणत जात॥

हरिपदछंद॥ शरमिष्ठा लघु रानि नृपाले अधिक प्रिया जिय जानी। शुक्राचार्य पिता अपने सों कह्यो बड़ी सुरजानी॥ दय कुशाप तिन भूप ययातिहि तुरत वृद्ध करि दीन्हे। बहुविधि बिनै कीन जब भूपति तब अस आयसु कीन्हे॥ माँगौ जाय पुत्र अपने सों युवाअवस्था राई। सुनि माँग्यो महिपाल सबन सों काहुन देन सुनाई॥ पाँचव पुत्र छोट पुरुनामे दय निज यौवन दयऊ। तब नृप कीन भोग बहु भाँतिन त्यहि अघ अयश न भयऊ॥
ताते बिनु बिचार पितु बानी। पालिय परमधर्म जिय जानी॥
अस बिचारि पितु आयसु करहू। पालहु प्रजहि शोक परिहरहू॥
राम मातु कह पुलकित गाता। तात कान करिये गुरु बाता॥
भूप अमरपुर रघुपति बनमा। तुम इमि धरत तात डर मनमा॥
अवध अमित उत्पात बिचारहु। जानि बाम बिधि धीरज धारहु॥
सादर गुरु आयसु अनुसरहू। करहु राज शोचहि परिहरहू॥

सवैया॥ तजि शोचसबै मन धीरजकै गुरु आयसु सादर शीश धरौ। प्रतिपालनकै परिवार प्रजा सबको यह शंकट शोच हरौ॥ पितु आयसु दूषण है न तुम्हैं बन राम सिया सुनि मोदभरौ। अवलम्बन तात सबै तुमहीं कुसमै जिय जानि सँभार करौ॥

दो० मातु बचन सुनि भरतके चली धार युग नैन।
धरि धीरज कर जोरि तब बोले अति मृदु बैन॥

सवैया॥ दीन हमैं उपदेश भलो गुरु जाहि किये सब मोरिभलाई। तापर आयसु मातु भयो सबके पुनि याहि मनै मतभाई॥ मातु पिता गुरुबैन तजे अघभूरि परै शिर धर्म नशाई। यद्यपि जानतहौं यह मैं जिय तद्यपि उत्तर देउँ ढिठाई॥

राम लषण सिय बनहिं सिधाये। पितु सुरपुर निज प्राणपठाये॥
अस उतपात भयो ममकाजू। त्यहिपर कहौ करन म्वहिंराजू॥
यहि महँ हित तुम्हारका होई। सब मिलि देहुराज म्वहिं जोई॥
मोरधर्म प्रभुपद सेवकाई। ज्यहिमहँ सब विधि मोरिभलाई॥
मातु कुटिलपन सो हरिलीन्हा। मोहिं अयश दुखदारुण दीन्हा॥
अब उपाय कछु मोहिं न भावै। यहै एक मनमें दृढ़आवै॥
बिन रघुपति पद पद्मनिहारे। जाय न जियकी जरनि हमारे॥
॥ कबित्त ॥ जाय बिनु चीरतन भूषण शृँगारजाल जाय बिनु बिरति बिचार ब्रह्मज्ञान की। जायहै सुभोग भूरि सरुज शरीर माहिं जाय जपयोग बिनुभक्ति भगवानकी॥ जाय बिनु जीव तनु सुंदर प्रकाशमान जाय बिनु बारिशोभ संकुल घटानकी। जायहै सकल मोर तैसही सुभाग्यवन्त देखे बिनु दायक अराम राम जानकी॥

दो० बिनुदेखे रघुबीर पद मिटै न हियको वेहु।
यह बिचारि भलचाहि मम सब म्वहिं आयसु देहु॥
होतप्रात ज्यहिं रामपहँ जाउँ सकल भयत्यागि।
रामचन्द्र मुख चन्द्रबिनु बुझै न हियकी आगि॥
म्वहिं समान को पापरत रहित भाग गतलाज।
ज्यहि कारण सिय रामबन गये त्यागि सुखराज॥
अबकछु मोहिं न सूझई यहै एक बिश्वास।
शरणागतबत्सल सदय जाउँ रामके पास॥

सवैया॥शरणागतबत्सलराम सदै शरणागत देखत छोहकरेंगे। जानतहौं निज स्वामि सुभाव कबौं न हृदै मम द्रोह धरैंगे॥ मैं शिशु सेवक नीचसदै प्रभु आपनजानि सुप्रेम भरैंगे। त्यों भगवन्त भरोस हमें करि हैं सुकृपा जब पाँय परैं गे॥

दो॰ यह भरोस जिय आनिकै होतप्रात युत बन्धु ।
जाबजहाँ सीता सहित राम लषण सुखसिंधु ॥
राम बिरह यामिनि अँधियारी । नृप सब रानि कुमतितमभारी ॥
रह्यो छाय कछु परत न जोई । पुरजन मुर्छिगये सब सोई ॥
लषण सीयकर बिरह बिशाला । गरजत स्वइ बृक ब्याघ्रकराला ॥
तारागण मुनि करहिं प्रकाशा । सघनतिमिर निशिहोइ न नाशा ॥
भरत बचन लखि भानु समाना । उठेजागि सब जानि बिहाना ॥
सबके मन सुखभयो अपारा । कहहिं भरत भल मंत्र बिचारा ॥
सो॰ भरत मंत्र भलकीन कहहिं लोग सब मुदितमन ।
ज्यहिं अवलम्बन दीन दुखसागर बूड़त सबहिं ॥
दो॰ करिप्रणाम मुनिवर चरण पाय सुभरत नियोग ।
गवने तब निज निज भवन मुदित सकल पुरलोग ॥
राम दरशहित अति अनुरागे । चलनसाज साजन सब लागे ॥
परमानन्द नगर सब कोई । जनु अहिलह्यो गईमणि खोई ॥
सबहिंन रथ गज बाजि सँवारा । चित्रकूट कहँ भये तयारा ॥
भरत जाइ गृह जहँ सब माता । कह्यो रामपहँ चलिय प्रभाता ॥
सुनि रनिवास न हर्ष समाती । जागत बीतिगई सबराती ॥
प्रातकाल उठि भरत प्रवीना । बोलि सचिव सेवक सबलीना ॥
कह्यो तुँरग रथ नाग सवाँरहु । चित्रकूट कहँ बेगि सिधारहु ॥
सुनत बचन सब सहित उमंगा । सजे तुरत रथ नाग तुरंगा ॥
दो॰ कह्यो सचिवसन भरत तब लेहु सुतिलक समाज ।
बिपिन जाइ रघुनन्दनहि देवैं मुनिवर राज ॥
यहिप्रकार सब साज सजाई । प्रथम चले रथ चढ़ि मुनिराई ॥
त्यहि पाछे गवने द्विजवृन्दा । जनु बहु वेष धरे श्रुति छन्दा ॥

त्यहि पाछे सब पुर नर नारी । गवने निज निज यान सँवारी ॥
शिविकाविपुलसाजि छबिखानी । तिनचढ़ि गवनकीन सबरानी ॥
त्यहि पाछे दोउ अवधदुलारे । घर पुर द्वार राखि रखवारे ॥
बिनु पग पनहीं बनहिं सिधाये । सिय रघुबीर चरण मनु लाये ॥

सवैया ॥ सियराम बियोग भयो कृशगात समात न शोच कलाप हिये । नहिं पाँयनहू पगत्रान धरे शुभ चीर बिभूषण त्याग किये ॥ भगवंत हृदै परिपूरण प्रेम सुचित्त कृपाकर पाँय दिये । किय सानुज आपु पयान बनै सँग मातु सबैपुर लोग लिये ॥

दो० भरत चरित सँभरत भरत हृदि मुद भभरत पाप ।
सरसतिरति रघुपतिचरण भरसति पुनिनत्रिताप ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहनम्बरदारचमौतिमजभगवंतसिंहविरचितभक्तिशिरोमणिग्रंथेहुमंत अयोध्यागमननृपतनुत्यागभरतचित्रकूटगमनवर्णनोनाम:-
छमोऽध्यायः ८ ॥

दो० राम लषण श्रीजानकी भरत सहित रिपुहंत ।
चरणकमल बंदन करत शीश नाइ भगवंत ॥
माधव मास सुपाख सित तिथि सप्तमी सुलीन ।
बुद्ध पुनर्वसु जानि भल भरत गवन बनकीन ॥

छप्पै ॥ समुझि राम सिय बिपिन भरत सानुज अनुरागे । जात पयादेहि पांय निरखि बाहन सब त्यागे ॥ राम मातु लखि जाय निकट बोली मृदुबैना । तात जाइ बलि मातु रथहि चढ़िये सुखऐना ॥ सुनि मातु बचन सानुज भरत सादर भये सवार रथ। सिय राम चरण पंकज सुमिरि सबहि गहे कानन सुपथ ॥ दिन प्रथम बास तमसाके तीर । किये भरत जाय सब सहित भीर ॥ करि द्वितियबार गोमति निवास। दिन तृतिय जाय रहे सई पास ॥

दो० होत प्रात सब भीर युत कीन्हे भरत पयान ।

कछुक दूरि चलि आय पुनि शृंगवेरु नियरान ॥
समाचार यह सुनेउ जब आवत भरत निषाद।
लाग्यो करनविचार मन उपजेउ अधिक बिषाद ॥
भरत विपिन कारण कवन आजुसाजि दलजाहिं।
हमेंजानि असपरत कछु अहै कपट मनमाहिं ॥

सवैया ॥ पहिले मिसु मातु पठाय बनै अबसाजि समाज चले दुउभाई। बन सानुज रामहि मारिकरौं पुरआय अकंटक राज सुहाई ॥ यहहोत न जोपि हृदै उनके कतलीन सुसंगयती कटकाई। नहिं भारतकीन भली यहबात चढ़े दलसाजि कुऔसरपाई ॥ नाग सुरासुर माहिंजिते बरबीरजुरे सबलै निजसैना। बुद्धिबलायन भूरि करैं भट जे रणपाछिल पाउँधरैना ॥ ते भगवन्त न वोड़िसकैं रघुनन्दन बाणचलैं जबपैना। तौ असको जग वीरअहै ज्वइ जीतिसकै रण राजिवनैना ॥

दो० तदपि कीन अनुचित नहीं भरतजानि यहबात।
कटुक निम्बतरु लागहीं कबहुँ कि मीठेपात ॥
अस फसाद मनमें समुझि कह्यो बोलि गुहज्ञाति।
होहु सजग धारहु सकल अस्त्रशस्त्र बहुभाँति ॥
तरणि बाँस हथबाँस सब बोरिघाट धरिलेहु।
करहु समर सम्मुख सरित जियत न उतरनदेहु ॥

कबित्त ॥ रामकाज जूझिये सुभट ठानि रारि आजु हानिहै न लाभपूरि देखिये विचारिकै। सम्मुख समर देवसरितीर स्वामिकाज लेहौ तनुत्यागि यश लोक दशचारिकै॥ मैंहौं लघुसेवक भरत राम भायपै सुदेहौं अघवाय आजु लोहघाव मारिकै। दीजे करि फौज बिनु वीरन सुभट ढूंढ़ि धारिये न पाँव नेकु पाछेको पछारिकै ॥

दो० यहिविधि सबहिउछाहकरि पुनि निषादपतिआपु।
कह्योबोलि सेवक सपदि ल्याउ झिलिम शरचापु॥
कवित्त॥ केवट समाज पाय स्वामीकी रजाय सब उठे हरषाय एक एकन प्रचारहीं। सुमिरि सप्रेम रामनामही सुभट बाँधि लंक में सुत्रोण पाणि चापबाण धारहीं॥ कुण्डि शिरधारि पैन्हि झीलिम सुतनमाहिं फरसारुबाँस शूल सेल्हन सुधारहीं। भाग्यवन्त वीर यों सुसाजि कै समरसाज आनँद सों आय गुहरावत जुहारहीं॥
दो० निरखि वीरँ लायक सकल सनमाने पति भील।
कह्यो आजु मम काजबड़ सुभट न लायो ढील॥
सुनत बचन बोले सुभट नाथ धीर मनलाउ।
रामकृपा जीतब समर धरब न पाछे पाउ॥
तोमरछन्द॥ अवलोकि वीर समाज। कह हर्षि यों गुहराज। अब बार नाहक लाउ। चट ढोल युद्ध बजाउ॥
दो० ऐस्यहि कह्यो निषादपति निरखत सुभट अनीक।
त्यहि अवसर बाईंदिशा भई अचानक छींक॥
सो विचारि कह बूढ़यक शकुन सोहावनआहि।
भरतहिं मिलिये जाय तुम ह्वैहै विग्रह नाहि॥
कवित्त॥उत्तरदिशामें छींकहोय जो कलहकार औ दिशि इशान धन कोटिको बढ़ावई। पूरुब सुछींक मित्र आपनो मिलावैं आनि दिशि अगनेय ताहि मृत्युको बुलावई॥दक्षिण कुछींक हानिकरै धन धान्यहू कि नैऋत दिशामें ऋद्धि सिद्धिको जनावई। भाग्यवन्त पश्चिम अशन दानिमिष्ट चारु वायव्यदिशामें उच्च बैठकको पावई॥
दो० केवट मुख उत्तर रह्यो भइ बायें जो छींक।
तौ पश्चिम बायव्य की है दिशि दोऊ नीक॥

सवैया ॥ छींक सुमंगल धाम अहै सुविचार कियो कछु विग्रह नाहीं। संग लिये पुर लोग सबै रघुनाथहिं भरत मनावन जाहीं॥ सो मम बैन प्रतीत करौ तुम जाय मिलौ चलिकै उनपाहीं॥ साहस कर्म करी नहिं कोइ करी सो विचार करी मनमाहीं।

दो० सुनि निषादपति हरषि कह कहत बूढ़ भलि बात।
बिनु बूझे सहसा करै सो पाछे पछितात॥

अस मनसमुझि मुदितगुहराजा। तुरत साजि सब भेंट समाजा॥
खगमृग बिबिध बसन धन मीना। कंद मूल फल सुरसरि पीना॥
मिलन साज सब सजि गुहनाथा। चलेउ मिलन लै पुरजनसाथा॥
जाय प्रथम मुनि पद शिरनावा। पाइ अशीश भरत पहँ धावा॥
आवत देखि भरत रथ त्यागी। चलेउ जानि रघुवर अनुरागी॥
केवट जाति गावँ निज नामा। कहि पुनिभरतहिकीन प्रणामा॥
करत प्रणाम भरत उर लाये। अतिप्रिय मनहुँ लषणकहँ पाये॥
निरखि देव नभ बरषहिं फूला। जयजय करहिं परम अनुकूला॥

सवैया ॥ लोकहु वेद सबै बिधि नीच निषाद छुये तनजा परछाई। होय न सो बिनु मार्जन शुद्ध कह्यो इमि वेद पुराणन गाई॥ भेंटत ताहि प्रफुल्लित प्रेम सुअंक भरे रघुनन्दन भाई। रामको किंकर ह्वै भगवन्त लह्यो नहिंको जग जाल बड़ाई॥

दो० मिलि सप्रेम केवट भरत पूँछी कुशल सुभाय।
कह्यो नाथ मम कुशल सब देखि तुम्हारे पाय॥
सब भांतिन अति नीच मैं अधम सुकरमन वाम।
जबते प्रभु आपुन कियो भयों सुमंगल धाम॥
देखि प्रीति रिपुहन बहुरि मिले ताहि उरलाय।
पुनि केवट रानिन सकल मुदित जुहारेउ जाय॥

पाइ अशीश मुदित गुह नाहू। पुनि सप्रेम भेंटेउ सब काहू॥
देखि सुभाव सहित अनुरागा। पुरजन तासु सराहत भागा॥
धन्य धन्य यह सब सुखधामा। भेंटेउ जाहि लाइ उर रामा॥
तब निषाद बहु बिनय सुनाई। सादर सबकहँ चल्यउ ल्यवाई॥
आये सब सुरसरि के तीरा। भये मुदितलखि धवलसुनीरा॥
करि मज्जन माँगहिं बर येहू। नित नव अधिक रामपद नेहू॥
तब गुह समय सरिससुखदायक। दीन बास जोजन ज्यहि लायक॥
सब सुपास करि सबै बहोरी। बहुबिधि बिनयकीन करजोरी॥
दो० राम सखहि तब बोलिकै भरत साथ निज लीन।
गये तुरत चलि रैनि जहँ सैन राम सिय कीन॥
कुश साथरी बिलोकि कै भये बिकल मतिधीर।
करि प्रणाम लोचन सजल बोलें बचन गँभीर॥
धिक धिक अधम अभाग मैं पापार्णव दुखमूल।
रामलषणसिय मोहिं लगि सहतबिपिन बहुशूल॥
सवैया॥ जे सिय राम सबै सुखधाम सकै कहि को तन सुंदरताई। मातु पितै प्रिय प्राण समान सुशील कृपाल सबै सुखदाई॥ गावत बेद पुराण जिन्हें भगवन्त रह्यो यश लोकन छाई। नाहि न कान सुने दुख जे अब ते महि सोवत दर्भ डसाई॥
दो० लषणलाल सम भाये सुठि भयो न त्रिभुवनकाहु।
ममकारण ते बन बसत सहत दुसह दुखदाहु॥
धिक्धिक् मोहिं कुमातु युत अयशमूल अघधाम।
फटि न अवनि प्रविस्यो कस न होत राम ते बाम॥
छप्पै॥ सुनिसप्रेम मृदुबैन कहत कर जोरि निषादू। जानि बाम बिधि नाथ तजौ मन सकल बिषादू॥ तुम रामहिं प्रिय प्राण प्राण

प्रिय राम तुम्हारे। धरहु धीर अस जानि हृदय तजि शोचन सारे॥
सुनि सखा बचन धरिधीर उर आये थल सुमिरत प्रभुइ। रघुवीरगुणन
बरणत भयो भोर लाग उतरण सभुइ॥

उतरि देवसरि करि अस्नाना। कीनसबहिं मन मुदित पयाना॥
भरत सबन्धु पयादेहि जाहीं। देखि सुसेवक मन सकुचाहीं॥
सुमिरत राम सीय लवलाये। तिसरे पहर प्रयागहि आये॥
सादर सबहिन मज्जन कीन्हा। अमित दान महिदेवन दीन्हा॥
करि प्रणाम माँगहिं बर येहू। बढ़ै राम सिय चरण सनेहू॥
तब कर कमल जोरि मृदुबानी। बोले भरत प्रेम रस सानी॥

दो॰ सकल काम दायक अक्षत तीरथराज सुजान।
दानि शिरोमणि आजु म्वहिं दीजे यह बरदान॥

सवैया॥ अर्थ न धर्म न काम चहौं निरबाणहुकी कछु चाह
नहीं है। ऋद्धिहु सिद्धिकी वृद्धि नहीं नहिं भोग बिलासन चाह-
त ही है॥ आठहु याम येहै बच मानस कर्म हृदय अभिलाष सही
है। श्रीरघुबीर पदाब्जन में सरसै नित प्रीति सुदेहु यही है॥

दो॰ भरत बचन सति सरल सुनि भई त्रिवेणी बानि।
रामहिंप्रिय तुम प्राणसम त्यागहु तात गलानि॥

सो॰ बेणि बचन सुखदाय सुनत भरत हरषे हृदय।
पुनि सादरद्वउभाय भरद्वाज आश्रम गये॥

कीन्ह प्रणाम मुनिहिं शिरनाई। मुनिवर धाय लिये उरलाई॥
दे अशीश आसन बैठाये। बोले मुनि तव बचन सुहाये॥
तात भरत जनि करहु गलानी। हमसबचुके प्रथम सुधिजानी॥
तुम रामहिं प्रिय प्राण समाना। मत तुम्हार जो कहै अयाना॥
पितु आयसु करत्यहु जो राजू। देत न दूषण चतुर समाजू॥

यह भल कीन हमारे माये। सहित समाज इहां जो आये॥
राम प्रेम मूरति तुम ताता। भक्त जनन कहँ आनँद दाता॥
आजु उदित भइ सुकृत हमारी। भरिलोचन जो तुमहिं निहारी॥
दो० सुनि मुनिवर के बचन बर भरत हृदय धरिधीर।
पुलकगात बोले बचन सुमिरि राम रघुबीर॥
सवैया॥ नाथ न मोहिं पिताकर शोच न शोच हमैं जगपोच कहावैं। नाहिन शोक नशैपरलोक अधर्म्म परै शिर धर्म नशावै॥ दारुणदाह यहै हिय एक न जाय सह्यो नित सोतन तावै। कारण मोहिं सियारघुबीर गये बनवास पयादेहिं पाँवै॥
दो० यह कुरोग दारुण दुखद भयोआय तनमाहिं।
त्यहिकर औषध शोधि मैं देखेउँ है कहुँ नाहिं॥
कुटिल केकई मोहिंलगि ठाटेसि यह सबठाट।
ज्यहिं सबकर सुख छीनिकै घालेसि बारहबाट॥
मोहं दैन्य भयंहास क्षुध तृष हानि गलानि।
मृत्युं क्षोभव्यथां कीर्ति द्विदश बाट दुखजानि॥
यह कुरोग नाशै जबहिं फिरिआवैं रघुराय।
बसै अवध सानन्द तब नाहिं न आन उपाय॥
भरत बचन सुनि सहज सोहाये। सहित सभा मुनि मन सुखपाये॥
कहमुनितातशोचजनिकीजिहि। प्रभुहिंबिलोकतसबदुखछीजिहि॥
पुनि मुनि सकलभांतिसुखदीन्हा। भरत निवास रैनि तहँ कीन्हा॥
प्रात न्हाय मुनिपद शिरनाई। कीन गमन हित आशिष पाई॥
सुमिरत राम लषण सिय शोभा। चले सकल दरशन मनलोभा॥
भरत नेम ब्रत प्रेम सुहावन। वरणि न जाइ राम पदपावन॥
त्रोटकछंद॥ रसना रटि रामहिं राम रहे। मन रूप प्रभा दृढ़

ध्यान गहे ॥ श्रुति राम कथै अभिराम दिये । चारित्ताद्भुत चारु हृदै सुलिये ॥ बशप्रेम सँभार सुगात नही । डग डोलि परै पग जात मही ॥ कहि राम सिया जब श्वाशभरैं । द्रुम पाहनहूं सुनिद्रैसुपरैं ॥ झरि पंथ प्रसूनन देवसभा । जय जैति कहैं लखि भूरिप्रभा ॥ भरतै बहुभाँति सराहिरहे । धनि धन्य महीभल जन्मलहे ॥ हरिपद छंद ॥ भरत प्रभाव देखि सुरराजै भयो शोच मनमाहीं । जात मनावन भरत रामको भली बात यह नाहीं ॥ जाय कह्यो तुरतैं हरि गुरु सों करहु यतन प्रभुसोई । भरत जाहिं पुर लौटि आपने रामहिं भेट न होई ॥ राम सुभक्त प्रेम बश संतत भरत प्रेम निधिआहीं । फिरि हैं अवशि काज सब नशिहैं बनिहै फ़िरि कछु नाहीं ॥

दो० सुनि बोल्यौ सुरगुरु बिहँसि हरिहरिगो तव ज्ञान ।
माया पति जनसों करन चाहत छल अज्ञान ॥
हरिद्रोही उबरै बरुकु हरिजन द्रोही नाहि ।
भक्त बैर भगवान के क्रोधानल जरिजाहि ॥
ताते सुरपति कीजिये भरत चरण अनुराग ।
भरत भक्तमणि जानि कै करिय कुटिल पन त्याग ॥

यहिबिधि सुरगुरु कहि समुझावा । सुनि सुरेश मन धीरज आवा ॥
बरषि सुमन करि भरत बड़ाई । जय जय कहहिं देव समुदाई ॥
करि मगवास भरतयुत भीरा । आवत भये यमुन के तीरा ॥
रामबरण लखि श्यामल बारी । प्रेममगन सब भये सुखारी ॥
त्यहिनिशिबसितहँसहितसहाये । होतप्रात सब उतरि नहाये ॥
करिप्रणाम यमुनहिं शिरनाई । चले भरत सब सहित सहाई ॥
सानुज राम सखहिं सँग लीन्हें । राजसमाज अग्र सब कीन्हें ॥
रामचरण पंकज चितुलागा । चलेजाहिं उमगत अनुरागा ॥

दो० सहज वेष पदत्राण नहिं मानसमलिन विशेखि।
मगवासी नर नारि इमि कहहिं परस्पर देखि॥

सवैया॥ का द्वउ लक्ष्मण रामअहैं सजनी यहिबाट गयेरहैं जोई। वै बपुरूप सुरंगवही समशील सनेह सुचालहु सोई॥ त्यों भगवन्त विलोकनि बोलनि वैसहि भेदपरै नहिंकोई। औरमिलान मिल्यो सबहै पै सँदेह यहै मनमें यकहोई॥ वेषनहीं इनको तसहै जसदीख उन्हैं सखिजात गली है। वै सुखपुंज प्रमोद भरे लिय संग हते निज नारिभली है॥ ये न प्रसन्न सुखेदलिये इन सङ्गअनी चतुरङ्ग चली है। त्यों भगवन्त ये भेदन सों मनहोत कछूक सँदेह अली है॥ त्रोटक छंद॥ इति चातुरता सुनि तासु भली। हरषीं मन माँहिं सबै सु अली॥ बहु भाँतिन ताहि सराहि रही। सखि दूसरि तो सब हाल कही॥ ज्यहि भाँति न काज अकाज भयो। रघुनन्द बनै तजि राज गयो॥ अब जात मनावन रामहिं ये। पुरलोग सबै सँग मातु लिये॥

दो० सुनि प्रसंग साँचो सकल भरतहिं बहुत सराहि।
कहहिं दैव असि आपदा क्यहु शिर डारै नाहि॥

त्रोटक छन्द॥ यक तौ छुटि सुन्दरराज गयो। दुसरे पितु मर्ण अकाज भयो॥ तिसरे बन राम सिया गवने। उतपात कहै सखि को कवने॥

दो० एक कहहिं ये मृदुल सुठि सुंदर परम उदार।
केकइ जन्म न योग विधि कीन्हे सब अविचार॥

सवैया॥ एक कहैं यह कीन सबै विधि जो हमरे सखि दाहिन आजै। लोकहु वेद विहीन कहां हम नीच त्रियाकृत खोटनकाजै॥ वास कुदेश कुठाँव हमैं यह दुर्लभ दर्शभयो सुख साजै। ज्यों भग-

वन्त मिल्यो विधि योग सुसिंधलबासिन्ह तीरथ राजै ॥ तन्वीछंद ॥ याविधि सों एकन प्रति यक बातैं करती बिबिधि बिधि अली है । जावत जौनेपुर नगर किनारे बिच जौनिन जवनि गली है ॥ देखतही भर्त छबि मँगन होवै सब जानि जनम सफली है । मांगहिं याही बर विधिहि करैं ये नितही मम हृदय थली है ॥

सो० यहि बिधि सहित समाज धर्म धुरन्धर बन्धु दोउ ।
मगन प्रेम रघुराज जाहिं चले सुमिरत हरिहिं ॥
पथिकमिलहिं बहुजात तिनह्निं बूझि रघुबरखबरि ।
शिथिल होहिं दोउभ्रात राम स्वभाव बिचारिकै ॥
सगुण होहिं सुखधाम जानि मुहावन मन हरष ।
अवशिमिलहिं सियराम असिप्रतीति सबकेहृदय ॥

दो० तब निषाद पति भरतसन कह्यो देखिये नाथ ।
शैल शिरोमणि है वही जहाँ बसे रघुनाथ ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ सुनि सत्य केवट बैन सबहिंन परम आनन्द पायऊ । अति प्रेम बारहिंबार कामदगिरिहिं लखि शिर नायऊ ॥ त्यहि समय भरतहि प्रेम जस कहि शेष पार न पायऊ । भगवन्त ते धनि धन्य जे सियराम पद रति लायऊ ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहबिरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेभरत समाजसहितचित्रकूटनिकटआगमनवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

दो० भवनिधि तारकपोत दृढ़ बिदित भूरि गुणगाथ ।
चरण कमल सियरामके बन्दौं महि धरि माथ ॥
राम प्रेम बारिधि मगन भरत समेत समाज ।
उभयकोसचलि बासकिय जानि अस्तदिनराज ॥
भोर भये उठि लोग सब चले सुमिरि रघुराय ।

राम दरश की लालसा रही सबन उर छाय॥

कुंडलिया॥ जागे उत रजनी बिगत रघुपति जक्क निवाश। स्वप्न बिलोक्यउ सीयनिशि लागी करन प्रकाश॥ लागी करन प्रकाश भरतजनु सहित सहाये। प्रभु बियोग त्रयताप तप्त व्याकुल चलि आये॥ आये सकल मलीन दुसह दुख दाहन दागे। दीख सासु विधि आन कहत सिय स्वप्नहिं जागे॥

सो॰ सीय स्वप्न सुनिराम भये शोचवश शोचहर।
सजलनैन सुखधाम बोले शुचिमन अनुजसन॥
तातस्वप्न इति जोइ मम बिचार फल नीकनहिं।
चहत सुनावन कोइ दुखदायक मानहुँ बचन॥

दो॰ पुनिप्रभु मज्जनकरि शिवहिं पूजिसुबन्धु समेत।
सहित सकल मुनि मण्डली बैठे कृपा निकेत॥

कबित्त॥ बंदि सुर साधु मुनि मण्डली सबैठि राम देख्यो दिशि उत्तरै जुशीशही उठायकै। छायोनभ धूरि भूरि व्याकुल बिहंग मृग छपे जाल आनि प्रभु आश्रम परायकै॥ भाग्यवन्त उठे अवलोकि श्रीकृपाल आपु कारण है काह चित्त चकित बनायकै। तौलगि किरात कोल बैसिन ते दौरि दौरि कहे सब समाचार प्रभु सन आयकै॥

भरत आगमन सुनि भव मोचन। प्रेम बिबश आये भरि लोचन॥
समुझि बचन पितु बन्धु सनेहू। भये शोचवश कृपा सुगेहू॥
बहुरि बिचारि ठीक मन धारे। भरत साधु पुनि कहे हमारे॥
धर्म्म नीति तजिकहब न आना। भरत भक्तमणि परम सुजाना॥
लषण राम मन दुख अनुमानी। बोले बचन जोरि युगपानी॥
नाथ बिना पूँछे कछु बात्ता। कहउँ क्षमा करबै जन त्राता॥

जेवश विषयदिवसनिशि धावहिं । ते विधि योग जु वैभवपावहिं ॥
ते वश मोह छाँड़ि शठनीती । चहत जनाव निजहि यहरीती ॥
यद्यपि भरत रहे बड़साधू । प्रभु पद पंकज प्रेम अगाधू ॥
दो० त्यऊ आजुलहि राजपद त्यागि धर्म्म निज जौन ।
जानितुम्हें अकसर बिपिन किये बिजयहित गौन ॥
सवैया ॥ ठानि कुमंत्र सु साजिदलै बन जानि अकेल तुम्हें दोउ भाई । आवत भे चलि काजयही हति रामहिं राज अकंटक राई ॥ जो यह बात न होत हिये चलते कतलै सँग तौ कटकाई । त्यों भगवन्त न दोष उन्हें लहि राजहि को न उठै बउराई ॥
दो० बेनु नहुष शशि अमर पति सहसबाहु तिरशंकु ।
काको नाहिंन राज मद दीन्ह्यो कलुष कलंकु ॥
बेनु भूप उर नृप मद पैठो । सो आपहि ईश्वर बनि बैठो ॥
विप्रशाप सो भयो विनासा । विदित भागवत में इतिहासा ॥
नहुष नह्यो रथ में द्विजवृंदा । चल्योशचिहिभोगनचढ़िमंदा ॥
भयो सर्प सो विप्रन शापा । मदवश सह्यो दुसह दुखआपा ॥
शशिगुरुबृस्पति तिय सँगभोगा । कीनवित्रश मद काम अयोगा ॥
इन्द्र अहल्यासन रति ठाना । भई सहसभग जग सबजाना ॥
सहस बाहु जमदग्नि कि गाई । मदवश बरबस लीन छड़ाई ॥
डारेसि मारि ऋषिहि करि कोहा । वंश सनाश भयो इति द्रोहा ॥
भूप त्रिशंकु द्रोह गुरु ठाना । भयचंडाल तिनहिं जगजाना ॥
बहुत कहाँ लगि कहौं गनाई । क्यहि न राजमद मरदेउ भाई ॥
यह तौ कीन भरत भरि नीती । ऋपुऋण रासनचहिय न रीती ॥
दो० एक कीन नहिं भरत भल राम शकृत बन मानि ।
आये चढ़ि लैदल विपुल स्वउ पारिहै अवजानि ॥

अस कहि लषण सक्रोध ह्वै नाय राम पद भाल।
सत्य सहज बोले बचन करि मुख अम्बक लाल॥
नाथ हमारे हित भरत कीन्हैं बहुत उपाय।
अब लगि गमखाये रहे अब न सहा सहिजाय॥

ताते नाथ कहौं तुम पाहीं। भरतहिं आजु समरके माहीं॥
सहित बन्धु अरु सकलो सैना। डरिहौं मारि सु एक बचैना॥
राम बिरोध हाल जस होई। देउँ बताइ उन्हैं सब सोई॥
कीन्हेनि जस अब पैहहिं तैसा। जसकलुषइअलहिअफलवैसा॥

सवैया॥ ज्यों मृगराज दलै गजराज खगेश यथा अहिवृन्द सँ-
हारौं। लेइ लपेटि लवा जिमिवाज तथा गहिदेखत भूमि पछारौं॥
त्योंभगवन्त गुमान सबै उनको चकचूरकै धूरमें डारौं। जो पै सहाँय
करैं शत शंकर तौ रण आजु प्रचारिकै मारौं॥

दो० देखिय रज लघुहै परम स्वउ परि चरण प्रहार।
चढ़त शीश गमखायँ किमि ह्वै हम राजकुमार॥

जबहिं लषण इमि बचन बखाने। सकल लोक लोकप डरपाने॥
भई गगन तब गिरा उदारा। ऐसहि है बल तात तुम्हारा॥

सवैया॥ तात प्रताप प्रभाव त्वयाबल ऐसहिहै कोउ जानि स-
कैना। पै बुधिवंतन रीतियही सु विचार बिना कछुकाज करैना॥
जे सहसा करिकै पछितहिं कहैं बुधवेद सुते बुधहैंना। यों भग-
वंत सु देव गिरा सुनि लक्ष्मणही सकुचे त्यहि ठैना॥

तब सिय राम लषण सनमानी। प्रीति सहित प्रभु बोले बानी॥
कही तात तुम जो नय सोई। पै न राजमद भरतहि होई॥
भरत सरिस जगतीतल माहीं। शुचि सेवक मम दूसर नाहीं॥
बिधि हरि हर पद जोवै पावैं। तबहुँ न नृप मद मनमें लावैं॥

कुं० होवै बरु घृत बारि ते तरणिहि तम मकुखाय ।
गोपद जल बूड़हिं घटज सुरतिहि सिंधु समाय ॥
सुरतिहि सिंधु समाय श्रवै हिमिकर बरु आगी ।
भरत हृदय नहिं भूलि कबहुँ नृपकर मदजागी ॥
जागी कबहुँ न कुमति सुयश अघ संचित खोवै ।
लषण शपथ तव सत्य भरत मन द्वैत न होवै ॥

गगनांगनाछंद ॥ भरत सरिस शुचि भाय काहुको बिधि नहिं दीनहै । गुण औगुण मिश्रित जक्त सकल ज्यहिं कीनहै ॥ भरत हंस गहि क्षीर गुणन औगुण जल तजि दिये । भगवन्त सुयश उज्जल जगत अपन जिन करिलिये ॥

यहिबिधि कहत भरत गुणगाथा । प्रेम पयोधि मगन रघुनाथा ॥
गगन मगन सुर बरषहिं फूला । जय जय करहिं परम अनुकूला ॥

नाराचछंद ॥ इतै नहाय भर्त्त पै सरित्तसा सभाजही । सबै थँभाय तत्र साथलै निषादराजही ॥ चले सबंधु आपु तत्र यत्र राम जानकी । सुकर्तही कुतर्कनै अनेकनै बिधानकी ॥ श्रिराम सीयनाम मो सुश्रौण माहिं सुन्तही । बिचारि मोहिं मामते न जाहिं चालि अन्तही ॥ मते कुमातु जानि जो कहैं सुमोहिं थोरही । निवाजि चूक आदरैं जु मानि आपु ओरही ॥ तजैं मलीन जानि मानिदास जो सुआदरैं । सबै प्रकार हों उन्हैंक भाव जोहि सो करैं ॥ सरभछंद ॥ यहिबिधि भरत गुनत मनमनही । चलत सुमग सुधि तनक न तनही ॥ निरखि भरत कै तब असि गतिही । गयउ बिसरि तन सुधि गुहपतिही ॥ पंकजवाटिका छंद ॥ लागि सगुन शुभ होन अपारन । केवट पति गुनि सो बदकारन ॥ मल्लिकाछंद ॥ शोच जाइ मोद सोहि । फेरि अंत खेदहोहि ॥

दो॰ सुनि केवट बाणी भरत कीन हृदय विश्वास।
नियराने तब आइकै प्रभु आश्रम के पास॥

सवैया॥ केवट तौ चढ़ि ऊंच शिलै यक हाथ उठाय कहै समुझाई। देखहु नाथ सुवृक्ष नवे जुविशाल मनोहर देत तकाई॥ पाकरि जम्बु रसाल तमाल सुतामधि मैं बट दिव्यसुहाई। ताहि तरे भगवन्त अनूप सुछावनि पावनि राघव छाई॥ छाँह यदा विशदा उमदा सुखदा सुदा रस एकरहाई। ताहि बटैतर सीय निजै कर वेदि रची वर मञ्जु सुहाई॥ बैठहिं आइ जहाँ मुनि वृन्द कहैं इतिहास पुरानन गाई। सादर सों भगवन्त सुनैं तहँ बैठि ससीय सबन्धुहुँ भाई॥ भूरि लसै तुलसी तरुतत्र कहूं सिय जू कहुँ लच्मण लाये। फूलि प्रसून रहे रँग रंग अभंग प्रभा सु अनंग लजाये॥ क्यों भगवन्त कहौं छबि सो अवलोकत लेतजु चित्त चुराये। कोशलपाल कृपाल तहां सरि पैस्वनि तीर कुटी सु बनाये॥ दोधक छन्द॥ केवटके सुनि बैन सु ऐसे। देख्यउ भरत सुवृक्षन जैसे॥ प्रेम उमंग युगाक्षन बारी। विह्वल गात न जात सँभारी॥ बारहिं बार प्रणाम सु करते। बेगिचले हृदयानँद भरते॥ भाग्यसुवन्त प्रणै किमि लेषै। गम्य सुयत्र न शारद शेषै॥ गीतिका छन्द॥ सिय रामपद अंकृत मनोहर निरखि अतिसुख पावहीं। मानहुं लह्यो निधिरंक बारहिं बार रज शिर लावहीं॥ कहिजात नहिं गति अकथ रघुपति मिलन सम भव चावहीं। अवलोकि खग मृग जीवजड़ वश प्रेम तन बिसरावहीं॥ बरषैं सुमन सुरवृन्द हरषित निरखि नभ जै जै कही। भगवन्त राघव प्रेम जलनिधि भरत पूरण हैं सही॥

दो॰ भरत विलोक्योउ दूरि ते सिय समेत द्वउ वीर।

करि प्रणाम लोचन सजल पुलकित अंग अधीर ॥

सवैया ॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल बाहु बिशाल उरायत सोहे । शीशजटा सरसीरुह लोचन आननकी उपमा नहिं टोहे ॥ बल्कल चीर निषंग कसे धनुबाणधरे कर देखत मोहे । सीय समेत बिराजत आसन दूरिहिते छवि भारत जोहे ॥ कवित्त ॥ कीन्हें मुनि वेष रति कामकीधौं रामसीय सुखमा अपार पेखि प्रेमहीय वर्तहीं । बल्कल बसन तूण कटि मैं कसन बान धनुकी लसनि पानि भानि सो न पर्तही ॥ श्यामतन सुन्दर जटाकेजूट शीशपै सु बाम भाग जानकी प्रकाश जाल कर्तही । भाग्यवन्त वेदिकापै राजहीं समुनि वृन्द देखते सुशोभ ख्याल भूल्योगात भर्तही ॥ सवैया ॥ कहिपाहि सुपाहि हरे रघुनंद सुदण्डसों भूतल धायगिरे । सुनि प्रेम अधीर उठे रघुवीर सुधीर सँभार न गात करे ॥ कहुँ तीर निषंग सुचापकहूं कहुं अंगन के पट छूटिपरे । भगवन्त उमंगत प्रेम हृदै रघुनंद सु अंकहि धाय भरे ॥

पुनि पुनि भरतहिं भेंटि कृपाला । मेटे विषम बिरह उरशाला ॥
फिरिफिरि भरत परत प्रभुपायन । समय सनेहवरणि सो जायन ॥
गदगद बचन कहत कर जोरे । क्षमहु नाथ अवअवगुण मोरे ॥
जै भगवन्त प्रणत प्रति पालक । जै सुज्ञात उर अन्तर हालक ॥

हरिगीतिका छंद ॥ जै अमलचंद दुचंद आनँद कंद आनन सुखप्रदं । जैदिव्य भास्करपुंज हाँस्कर तव सुहाँस्कर मुदसदं ॥ जै प्रणतपाल कृपाल कोशलपाल जन रक्षक नितं । जै अखिल कारण करण तारण तरण प्रति पक्षक जितं ॥ जै सुलभ दुर्लभ दरन दुर्मति रमति सचराचर ध्रुवं । जै प्रकृति पार अपार श्रुति यश नेति नेतिहि नित ध्रुवं ॥ जै शुद्ध सचित रूप सद्गुण निलय सुर मुनि

वंदितं। जै सत्य व्रतमद्वैत निर्गुण त्रिगुण कृत निज छंदितं ॥

दो० जयजय जय रघुवंश मणि जय प्रभु पूरण काम।
करहु कृपा जन जानि निज कृपासिंधु श्रीराम॥

भरत विनै सुनि इमि रघुबीरा। भये प्रेमवश परम अधीरा॥
पुनि प्रभु भरत लाय उर लीन्हें। कहि मृदुबचन सुधीरजदीन्हें॥
भरत रामकै मिलनि सुहाई। कहत शेष शारद सकुचाई॥
सो मैं कहौं कवन विधि गाई। जलनिधिउलचिकिसूतिनपाई॥
जै जै करहिं गगन सुर वृन्दा। जै कृपाल जै राम मुकुन्दा॥
पुनि रिपुहनहिं मिले रघुराई। प्रेम प्रमोद बरणि नहिं जाई॥
बहुरि राम केवट उर लाये। भेंटत अति सनेह सचुपाये॥
भरतहिं मिले लषण सह मोदा। लीन उठाय भरत निज गोदा॥
पुनि लछमण भेंटे लघुभ्राते। अधिक सनेह प्रेम भर गाते॥
बहुरि लषण उमगत अहलादा। धाय लाय उरलिये निषादा॥

गीतिका छन्द॥ पुनि मुदित दूनौंभाय बन्दे सकल मुनिगण जायकै। भय मुदित सानुज भरत अभिमत शुभ सुआशिष पाय कै॥ पुनि हरषि दूनौंभाय सिय पद पद्मरज माथे धरीं। भगवंत दीन्हीं सीयँ आशिष मनहिंमन आनँद भरी॥

सो० जानिसीय अनुकूल आदिशक्ति त्रिभुवनजननि।
मिटी सकल उर शूल भये मुदित सानुज भरत॥

दो० तब केवट करजोरिकै कह्यो सुनिय रघुनाथ।
मातु सकल पुरजन विकल आये मुनिवर साथ॥

गुरुआगमन श्रवण सुनि पाये। तुरतहिं राम तहां चलिआये॥
कीन्ह प्रणाम गुरुहिं दुउभाई। धाइ लीन मुनि हृदय लगाई॥
पुनि कृपाल दुख दोष निकंदन। अनुज सहित भेंटे द्विजवृंदन॥

जानि लोग आरत सुर नाहू। क्षणमहँ मिलत भये सबकाहू॥
रही हृदय जाके रुचि जैसी। कीन्हीं प्रभु पूरण त्यहिं तैसी॥
यह न बड़ी रघुबीर बड़ाई। सचराचर व्यापक श्रुति गाई॥
धन्य धन्य ते नर बड़भागी। जे सियराम चरण अनुरागी॥

दो० पुनि प्रभु देखीं मातु सब आरत परम बिहाल।
कैकेइहि भेंटे प्रथम सादर राम कृपाल॥

गीतिकाछंद॥ परिपायँ करि बहुविनय जननिहिं बिबिध बिधि धीरजदिये। पुनि मिले मातनसकल रघुपति तपति उर शीतलकिये॥ भेंटे सुमित्रहि जाय पुनि प्रभु लायउर जननी लिये। भगवन्त मानहुँ लहेउ संपति रंक अति आनँद हिये॥

दो० कौशल्याके चरण पुनि परे जाय द्वउभाय।
तन पुलकित लोचन सजल लीन माय उरलाय॥

तोटकछंद॥ त्यहि औसर केर बिषाद महा। कवि क्यों कथ धीरन धीरबहा॥ मिलि मातन राम समुद्र बलै। गुरुसों कह धारिय पावँ थलै॥ मुनिराज सुआयसु पाय तबै। उतरे सुजहाँ तहँ लोग सबै॥ गुरु मंत्रि द्विजाम्बन संग लिये। शुभ आश्रम राम पयान किये॥ मुनिराज पगै सिय आनिपरी। शुभ आशिष पाय प्रमोद भरी॥ पुनि विप्रतिया गुरु नारि सहा। सिय बन्दि सु आशिर्बाद लहा॥ पुनि सासुन सीय मिली सबही। अवलोकि दशा दुख दून लही॥ तिनहूं लखि सीतहिं शोक किये। बश प्रेम लगाय हृदै सु लिये॥ सिय बारहिंबार सु पाँयपरी। सब सासुन भेंटत प्रेमभरी॥ तिन सीतहि दीन अशीश यही। रहिहौ सु सुहाग भरी नितही॥

दो० तब बशिष्ठ मुनि धीर धरि सनिन कह्यो बुझाय।
बैठि जाहु गईं बैठि सब मुनिवर आयसु पाय॥

तोमरछंद ॥ तब बोलियों मुनिराय । सुनिये सबै चितलाय ॥ ब्यवहार लौकिक झूठ । भल ताहि जो रहरूठ ॥ पुनि गाइयो सुख दात । परमार्थ की कछु बात ॥ कहि फेरि मर्ण भुवाल । सुनिराम भो दुखजाल ॥ दोधकछंद ॥ कारण मर्ण पिता निज नेहू । जानि दुखाति लहे सुखगेहू ॥ भूरि विलाप करैं सबरानी । शोक समाज न जाय बखानी ॥ शशिवदनाछंद ॥ तबमुनिनाथा । कहिबहु गाथा ॥ रघुकुलनाथा । श्रुतिबरमाथा ॥ बहुसमुझाये । सहितसहा ये ॥ सुरसरिन्हाये । पुनिथलआये ॥ त्यहिदिनझारी । नरअरुनारी ॥ रहि बिनुबारी । ब्रतबरधारी ॥ भयभिनुसारा । मुनिजुउचारा ॥ स्वइ सबकारा । प्रभुसुखसारा ॥ तारकछंद ॥ करितात क्रिया जस वेद बखानी । भय शुद्ध जु शुद्ध सदा श्रुतिबानी ॥ सुखसिंधु परात्पर ब्रह्म सुशीला । निज भक्त हितार्थ कृताद्भुत लीला ॥

दो० लीला अद्भुत रामकी जानै बिरला कोइ ।
ज्यहि जाने लीला अपर जात आपही खोइ ॥

कवित्त ॥ पायकै शरीर दिव्य मानवान चेतु चित्त वित्तही के हेत नित्त धाव धाम धामहै । बेद शास्त्र वाक्यको नमानितैं प्रतीत नीच विषयाहि कीच बीच मग्न आठ याम है ॥ भाग्यवन्त कौल कै बेकौल हान हीन बुद्धि शुद्धिकै कृतांत लोक शोक मैं जुआम है । ऊमर तमाम कै बेकामरे निकाम अब सीय रामनाम क्यों न ध्यावसि हराम है ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहचमोत्सजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे भरतचित्रकूटआगमनश्रीराममिलापवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

हरिपद छंद ॥ सुमिरत जाको नाम कामतरु काम सकल मन पाते हैं । गावत गुण गण विमल जासुके सब दुख दोष नसाते हैं ॥

आदि अंत कोउ जानि न पावत श्रुति ज्यहि नेति बताते हैं। भाग्यवंत स्वइ राम सियाके सादर हम शिर नाते हैं॥ भक्तहेत मानुष तनुधारे किये कलुष कलिहाते हैं। सुन्दर श्याम गौर छबि आगर सबहीके मन भाते हैं॥ कहँ लगि कहौं भरे गुण पूरण नारदादि यशगाते हैं। भाग्यवन्त स्वइ रामसियाके सादर हम शिरनाते हैं॥

कौशलपुर बासी नर नारी। चित्रकूट सब रहहिं सुखारी॥
करहिं नेम ब्रत संयम नाना। दिनप्रतिदेहिंबिबिधबिधिदाना॥
ज्येष्ठकृष्ण द्वितिया शुभ जानी। बोले प्रभु गुरुसन मृदुबानी॥

सवैया॥ नाथ दुखी पुरलोग सबै अति मूल फलादिक अम्बु अहारी। सानुज भर्त समंत्रिन मातन जात न सन्मुख मोहिं निहारी॥ बीतत मोहिं मनो पल कल्प सु आपु इहां पितु स्वर्ग सिधारी। सो अब आपु समेत सबै पुर धारिय पावँ सबै हितकारी॥

कहमुनिसुनहु भानुकुल नायक। कसनकहहुअसतुमसबलायक॥
ये सब लोग दुसह दुख ताये। भये सुखी तुम दरशन पाये॥
ताते कछु दिन दीजे रहना। फिरि सब करिहैं तुम्हरे कहना॥
सुनि गुरु बचन भले प्रभु भाषा। लगेरहन सब युत अभिलाषा॥

छंद त्रिभंगी॥ पावन पय पानी गुण गण खानी कृतमलहानी सुखकारी। ज्यहि देखत भागै कलुष सु जागै सुकृत बिरागै भव-बारी॥ तिहुँ काल नहाहीं सब त्यहि माहीं हरष समाहीं सुखसाथै। भरि नैन निहारी होहिं सुखारी छबि अति भारी रघुनाथै॥ रघुपति गिरि कानन सब दुख भानन सुयश पुरानन ज्यहि गायो। देखन त्यहि जावैं लखि सुख पावैं शीश नवावैं मन भायो॥ झरना बहु झरहीं खग रव करहीं मृग गण चरहीं स्वच्छन्दै। तरु बिबिध समूले युत फल फूले लखि अनुकूले सुख वृन्दै॥ सरसिज बहु बरनै बिक

सित सरनै कवि किमि बरनै छबि ताकी। गुंजहिं बहु भृंगा अगि-
णित रंगा सहित उमंगा रस छाकी॥ बहु कोल किराता भरि भरि
पाता शुचि सुखदाता मधुमेवा। गुण स्वाद बखानी सबहिन आनी
देहिं सुजानी सहसेवा॥ बहु मोल सोदेहीं तेनहिं लेहीं फेरत देहीं
दुहाई। कहहिं सुबानी तुष्टतज्ञानी प्रीति पिछानी सुहाई॥ तुम सु-
कृत रासी अवध निवासी सुखसुबिलासी स्वामिमया। हम पापप-
रायन तव सुखदायन दरशन पायन रामदया॥ तुम पाहुनप्यारे
बनपगधारे हमहिं सुधारे सुखदानी। अब कृपाकरीजै दलफल ली-
जै सकुच न कीजै जनजानी॥ हम आप कँगाला औरन पाला
तुमहिं कृपाला देव कहा। सियराम कृपाते भय दुखहाते मनन स-
माते मोदमहा॥ सुनि वचनसुहाये सब सुखपाये लै सु सिधाये
फल मूला। भय परम सुखारे बनचर सारे तिनहिं बिचारे अनुकू-
ला॥ यहि विधि प्रभुपासा सहित हुलासा करहिं निवासा सब
लोगा। इच्छा मनमाहीं भवन न जाहीं इहैं रहाहीं सुखयोगा॥ सा
नंद कृपालै सब सुखआलै जन प्रतिपालै छबि ऐना। बसुधाम बि-
लोकी होहिं बिशोकी स्वामि त्रिलोकी भरि नैना॥ ते धन्यसुभा-
गा जिन अनुरागा प्रभुसन लागा जगमाहीं। भगवन्त सुताके
हित पटुताके लोक त्रिताके समनाहीं॥

दो० सिय सादर सबसासु निज करि सेवा वश कीन।
देखि प्रेम सुखपाय तिन सिखभल आशिष दीन॥
सबके मन संशय यहै प्रभु फिरिहैं के नाहिं।
भरतकोटि बिधि तर्कना करत रहे मनमाहिं॥
होत प्रात मज्जन सुकरि बंदे प्रभुपद जाय।
तेहि अवसर श्रीभरतको पठये ऋषयबोलाय॥

तोमरछंद ॥ मुनि पायँ शीश नवाय। गे बैठि आयसु पाय ॥ द्विज मंत्रिआदिक ज्ञानि। बटुरे सभासद आनि ॥ तब भाषि योहिं बशिष्ठ। सुनिये सबै जन शृष्ठ॥ वशिष्ठ सवैया॥ धर्म धुरीन दिवाकर वंश दिवाकर आकर ज्ञान सुजानू। पालक संतत सेतु श्रुती सतिसंध कृपालय नीतिनिधानू॥ मातु पिता गुरु बैन सदारत आरतके हित जीवन प्रानू। रामरजाय किये सबको भल भाषत आपन मैं अनुमानू॥ मंगल मूल हरै भवशूल प्रदानँदकंद सुमारगएकू। भाव सबै सुख शोभमई कल श्रीरघुनंदन को अभिषेकू॥ त्यों भगवंत सुरामहिको रुख राख्यहि राहत धर्म अनेकू। जाबिधि औध चलैं रघुबीर करौं सु उपाय कहौ सविवेकू॥ नयमालिनी छन्द॥ सुनि मुनिकी पुनीतवरबानी। धरम विनीत स्वार्थमय सानी॥ उतर न देत काहु बनिआवा। तब उठि आप भरत शिरनावा॥ भरत कवित्त॥ भानुवंश चारुमैं उदार भये भूप भूरि एकन सों एक त्यों सरसहोत आवते। जन्महीके हेतु पितु मातुकृत कर्म जैस वैसही सुदेत विधि घटिना बढ़ावते॥ भाग्यवंत राउरि अशीष सो प्रसिद्धयो सुदलितिन दोषदुख सुखको सजावते। छेकिगति विधिकी सुटेकी निजटेक जौन मोसे मतिमंदन सों बूझत उपावते॥

दो० बैवस्वत मनु पुत्र हित यज्ञ किये सुखदानि।
रानि वाक्य मुनिवर कृपा जन्मी कन्या आनि॥
देखि सुता को भूप निज मनमें दुख बहुकीन।
तब मुनि आशिरबाद दै कन्यहि सुत करि दीन॥
सोई सुत यकबार चलि गयो सुयक बन माहिं।
तहाँ शाप शिव पूर्ष को नारि होइ जो जाहिं॥
ह्वैगो कन्या पुत्र स्वइ कह बशिष्ठ विधि पाहिं।

मम अशीश यह सुतरहा करिहौं फिरि सुत याहिं॥
कह ब्रह्मा तव टेक सुत रहीमास यह षष्ठ।
षष्ठमास रहि नारि पुनि लीन्हे मानि बशिष्ठ॥
इति जु टेक टेकी कठिन सके न बिधि हर टारि।
ते म्वहिं पूँछत मंत्र अब यह हतभाग्य हमारि॥

बशिष्ठ दोहा॥

राम कृपा जापर करहिं ताहि सुलभ सब तात।
रामबिमुखसिधिस्वप्ने नहिं सुगमहु अगमलखात॥

अहीर छंद॥ हौं सकुचत मन तात। भाषत कछु यकबात॥ जे नर जग बुधि व्रात। अर्घ तजहिं सब जात॥ सादर तुम द्वउभाय। जाहु बिपिन सुखपाय॥ देइय पलटि सुधाम। लक्ष्मण युत सिय राम॥ भरत सवैया॥ कानन बासकरौं भरि जन्म कहौं मुनि राज सुसत्य बखानी। मोहिं सुपास वियो सम याहि न भाषतहौं कछुकैन सयानी॥ त्यों भगवन्त तुम्हैं सरवज्ञ सुजान सजानकि राम सुजानी। जोफुर आपु कहौ सुकृपाकरि कीजिय नाथ प्रमाण सुबानी॥ सुनत भरतकै सरल सुबानी। सभासहित हरषे मुनि ज्ञानी॥ निज अनुकूल भरत मुनिपाये। युत समाज रघुबर पहँ आये॥ करि दण्डवत मुनिहि रघुबीरा। आसन दीन धर्मधुर धीरा॥ मुनि निदेश बैठे सब लोगा। निरखि राम बिसरे सब सोगा॥ बशिष्ठ सवैया॥ सुनिये सुखधाम सुराम कृपाल सदाजनपाल स्वच्छन्द चरौ। गुणज्ञान निधान सुजान शिरोमणि धार्मिक पंथ अनै न धरौ॥ भगवन्त सुजान गती सबकी सचराचर ब्याप्त सुभाय ढरौ। हित भारत मातु सुलोगनको ज्यहि भाँतिहुवै सु उपाय करौ॥ राम कवित्त॥ रावरेही हाथहै उपाय सब नाथ हित रावरेही

रुखराखे सबहीक जानिये। होइ जोकृपाल अब आयसु प्रथम मोहिं सत्यहौं कहत ताहि माथे निज मानिये ॥ भाग्यवन्त फेरि ज्यहि होइहै रजाय जस करिहै सु भांति सब सेवा सुख दानिये। सुख में अमल कीर्त्ति चन्द तें दुचन्द तासु गुरुके बचन जो प्रमाण हीय आनिये॥

वशिष्ठ दोहा॥

राम कह्यो सो सत्य सब यहै धर्म्म मतसार।
पै सनेह शुचि भरतको त्यहि नहिं कीन बिचार॥

सवैया॥ ताहित बारहिबार कहौं बश भारत भक्तिभई मति मोरी। मोमत राखिकरौ रुचि भारत सो शुभ राउरि बात न थोरी॥ सादर कान बिनै करि भर्त बिचार करो मन ताहि बहोरी। त्यों भगवन्त किह्यो मतलोक सुसाधु नृपौ नय धर्म निचोरी॥ हरिगीतिकाछंद॥ अनुराग गुरु अति भरतपर अवलोकि प्रभु सुखमान्यऊ। अत्यन्त धर्म धुरीण भरतहि दास निज शुचि जान्यऊ॥ पदपद्म शीशनवाय सादर पाणि पंकज जोरिकै। बोले मनोहर बचन मंजुल प्रेमरस मय बोरिकै॥ राम सवैया॥ राउरि सत्त सुसत्य कहौं न त्रिलोक भयो जस भारत भाई। भागयवली भगवन्त स्वई गुरु सेवक जो तजि मान बड़ाई॥ राउर जापर यों अनुराग सुभागसकै त्यहि को जगगाई। सोइ किये भल जो कहैं भारत यों कहि राम रहे अरगाई॥ वशिष्ठ दोहा।

तात भरत सब सकुचतजि निज मनकी रुचिजौन।
कृपासिंधु रघुबीर सन कहहु मुदित मन तौन॥

सुनि गुरु बचन राम रुखजानी। भयउठि ठाढ़ जोरि युगपानी॥
सजल नयन अति पुलकशरीरा। गद्गद बचन कहत धरिधीरा॥

जो मुनिनाथ कह्यो स्वइ ठीका। कहव काह यहि ते मैं नीका॥

॥ भरत सवैया ॥ जानत स्वामि सुभावहि मैं अपराधिहु पै कृत क्रोध कबौना। मोपर भूरि सनेह कृपासु लख्यो रिस खेलत खेल समौना॥ बोरथहि ते न तज्यों सँग स्वामि सु कीन्हनि भंग कबौ मनहौंना। मैं प्रभुरीति कृपा जिय जोहि सुहारयहु खेल जितावहिं तौना॥ मैंहु सनेह सकोच लिये समुहें प्रभु केसु कह्यो कछुबैनन। दर्शन तृप्त न आजु लगे बढ़ि प्रेम पियास रही युग नैनन॥ त्यों प्रतिकूल विरंचि भयो सुसक्यो सहिमोर दुलार सुखैनन। डारि दिये मिसमातु कुबीच बिचारत सो चित धारत चैनन॥ छप्पै॥ यहौ कहत नहिं लहत आजु ध्वहिं बाम विधाता। निज विचार भवकौन साधु शुचि संगलदाता॥ मैं सुठि सुंदर साधु मातु मतिमंद बतावों। यह बड़दोष सराहि आपु पर दोष लगावों॥ कहुँ फरत शालिकोदव बिटप सर संबुक भवमुक्त कहु। भगवन्त भजन भगवन्त बिनु सुख कि जीव क्यहुँ युक्तिलहु॥

दो० काहुहि दोषन क्लेशकछु यह मम उदित अभाग।
बिनु समुझे कटु बचन कहि दीन्ह्यों जननिहिं लाग॥
करि विचार सब भाँति निज देख्यों हृदयमँझार।
सीयराम तजि आन कहुँ हित नहिं होइ हमार॥

॥ सवैया ॥ सतिभाव कहौं छल छाँड़ि सबै प्रभु जानत हौ तुम झूठसही। तनु त्यागनकै नृप पूर किये प्रण प्रेम सुकीरति पुंजलही॥ जननीकृत केवल कुमति है यहि माहिं कछू त्यहि लाभ नहीं। अवलोकि सुमातु न जाहिं सबै इतिजाल• अनर्थक मूलमही॥ कबित्त॥ करि मुनि बेष राम सीय सालपण आपु गये बनबास दास कान सुनि पाई है। अति सुकुमार पदत्राणहू न प्यादे

पायँ शंकर भवानी साखि रह्यौं याही घाई है ॥ बहुरि बिलोकि कै निषादको संनेह चारु कुलिश कठोर उर सो न दरकाई है । सोई निज नैनन बिलोक्यो सब आनि अब जीवतहि जीव जड़ सबहि सहाई है ॥ सवैया ॥ देखि जिन्हें मग साँपिनि बीछि तजें बिष तामस तीक्षण ताई । त्यों भगवन्त सुशील सुभाव करै जिनकी सब लोक बड़ाई ॥ ते रघुनन्दन लच्मण सीय लगे अनहित्त सुजाहि बनाई । तासु तनय तजिकै दुखदारुण दैव कहौ अब काहि सहाई ॥ मालीछन्द ॥ सुनि ऐसे बचन भरत सुभाय के । चली धार जल नैन रघुराय के ॥ दबिगे सभाके जन दुखभारहै । पर्यो कमलकै बन ज्यों तुषारहै ॥ मुनि बशिष्ठ उपदेश बहु भाँति सों । भगवन्त कीन्हे सबहिन शांति सों ॥ राम मोदकछन्द ॥ तात गलानि हृदय जनि मानहु । जीव गती वश ईश सुजानहु ॥ तिनिहु काल त्रिभूवनमें सत । पुण्ययशी तुमसों नहिं मोमत ॥ कूटिलता तुम पै उर आनत । लोकहु सापरलोकहु भानत ॥ दोष धरैं जननी जड़ तेइनि । नाहिं न साधु सभा जिन सेइनि ॥

दो० साधु संग जिन कीन भल तिनको तौ मत एहु ।
कैकेई परहित अयश लिय त्यहि दोषन देहु ॥

तात नाम तुम्हरो लय लोका । ह्वैहैं नर भवबन्ध बिशोका ॥
सुमिरत तुमहिं तात जग माहीं । सत्य कहौं कछु दुर्लभ नाहीं ॥
तुम गलानि मानहु जनि कोई । रहत न बैर प्रीति कहुँ गोई ॥
निजहितअहितजानि पशुलेहीं । गुण ज्ञानादि भरी नर देहीं ॥

॥ सवैया ॥ काह करौं असमञ्जसहीय सुजानहुँ तात भलीबिधि तोहीं । प्राण दिये प्रण लागि महीप सुराख्यउ सत्य तज्यो ज्यहि मोहीं ॥ शोच बड़ो तिन मेटत बैन सकोच त्वया त्यहि सों अधि

कोही। त्यों भगवन्त दियो गुरु आयसु तात कहौं करिहौं मतिद्रोही॥

सो॰ राम बचन सुख मूल सुनत सभा हरषी सकल।
मिटी मलिन मन शूल भरत हृदय आनँद परम॥

भरत राम सम्वाद सुहावा। सुनि अमरन मनसंशयआवा॥
राम सुभक्त विवश श्रुति बानी। फिरहिं न होइ काज सुरहानी॥
बहुरि विचारि धीर मन आना। परहित निरत सुभक्त सुजाना॥
भरत धर्मधुर फुर प्रभु दासा। करिहैं कसनं धर्म परकासा॥
अस विचारि सब सुर अनुरागे। भरत चरण मन सुमिरण लागे॥
कह सुरगुरु सुनु सुरपति बैना। कीन्हेउ मन्त्र सकल सुख ऐना॥
मन बच कर्म देखि जन सेवा। तुष्टत त्यहि परतर प्रभु देवा॥
भरत राम द्वउ एक न भेदा। अस मन समुझि तजहुसबखेदा॥

दो॰ अन्तरयामी रामप्रभु जानि सुरन मतयेहु।
भये शोचवश वचन पितु उतइत बन्धु सनेहु॥

पुनि सब अमर भरत की शरणा। तिन्हकरशोकअवशिम्बहिंहरणा॥
तबहिं भरत निज मन अनुसारा। परेउ आइ सब मम शिरभारा॥
कहउँ फिरन तौ अनय अधर्मा। बिनु प्रभु काहकरब मैं घरमा॥
करि कुतर्क बहु मन दृढ़आना। प्रभुआज्ञा आपन कल्याना॥
उठि सप्रेम धरि प्रभुपद माथा। बोले भरत जोरि युग हाथा॥

दो॰ कृपा वारिधर दीनहित विरुद विदित तनजोहि।
कहहु कृपाकरि नाथ अब काह कहावहु मोहि॥

मैं निजमुख का कहौं बखानी। सबविधिते मम बुद्धिहेरानी॥
उदय अभाग करमफल पाका। चाखब सुखयुत दुखरस ताका॥
प्रभु सरवज्ञ कृपाल सुजाना। ज्यहिविधिहोइ सकलकल्याना॥
स्वइ कृपाल अब करहु उपाऊ। जनहित सकुच न राखबकाऊ॥

सवैया ॥ जान शिरोमणि जानसबै मन स्वारथ स्वाभि फिरे सवहीको। ईश अनीशन के जगदीश सुबीसविसे किय आयसु नीको ॥ है यह स्वारथहू परमारथ सारु शृँगारु भलो सुगतीको। सोइकरो करि नाथकृपा हित दास सकोच परै नहिं जीको ॥

दो० नाथ सुनिय यक विनय अब करब उचित मतजौन।
तिलकसाज आन्योसकल करियसफल प्रभुतौन ॥

सवैया ॥ पठई स्वहिं सानुज देवबनै रहि कीजिय आपु सनाथ सबै। नतु फेरिय बन्धु द्विधामचलौं सँग मैं बन आयसु होइ अबै ॥ नहिं जाहिं बनै तिहुँभाय फिरौं सहसीय कृपाजय खूबफबै। भगवन्त प्रसन्नहुवै मनज्यों स्वइ कीजिय नाथ निबाहतबै ॥ देवदियो सब भार हमैं शिर धर्मविचार कछू स्वहिं नाहिन। स्वारथहीलिय बात कहौं सब चेतरहै चित आरतमाहिंन ॥ मैं अघ अवगुण धाम सराहत स्वामि सुसाधु गन्यो कछु ताहिंन। नाथ स्वईमत भाव हमैं मन स्वामिसंकोच लहै ज्यहि नाहिंन ॥

दो० भरतवचन शुचि सरल मृदु पूरण प्रेम गँभीर।
मुनि रहिगे चुपसाधि सब सहितसभा रघुवीर ॥

त्यहि अवसर मिथिलाधिप दूता। आये तहाँ सुनत विधिपूता ॥
लीनबोलि शिरआइ नवाये। रामहिलखि तिन अतिदुखपाये ॥

वशिष्ठ दोहा ॥

हे चरचातुर रुचिर चिर कहियो वचन सुवेश।
सहित समाज सुराज सब कुशल भूपमिथिलेश ॥

चतुरंसा छन्द ॥ सुनि मुनिबैना। भरि जलनैना ॥ करि पुट हाथा। धरि पग माथा ॥ सकुच समाई। कहत दुखाई ॥ दूत सवैया ॥ मुनि बूझब राउर सादर स्वै कुशलात प्रदात कि बातभई। नतु कौ-

शलेनाथहि साथचली कुशलात सबै मुनिनाथ गई ॥ मिथिलायुत औध विशेषि भयो सुअनाथ सबै जगतापतई। भगवन्त न जानि परै सुगती जलजासन की सब रीति नई ॥

इतिश्रीभक्त्योध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेचित्रकूट जनकदूतआगमनवर्णनोनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

कुण्डलिया ॥ जाके गुणगण अगम अति पावत निगम न पार। परब्रह्म परमातमा निर्गुण गुणआगार॥ निर्गुण गुण आगार सुलभ सेवत भव भञ्जन। रघुकुल मणि अवतार सुखद सज्जन जन रञ्जन ॥ रञ्जन सुर मुनि मनुज शरण कछु अगम न ताके । बंदत पद भगवन्त नमत विधि हरिहर जाके ॥

दो० पुनि धरि धीरज जनकचर, नाय सुमुनि पद भाल।
कह्यो कृपाकरि नाथ अब सुनिये मम नृप हाल ॥

दूत भुजंगप्रयात छंद॥ गये राम आरण्य ताही बिशोकै। तजे प्राण भूपाल गे देवलोकै ॥ सुसुन्तै समाचार तिर्हूति राजा । भये शोक आकुल्लते सासमाजा॥ करी जो सुता भूप केकैकि करणी।।सुसुन्तै पर्यो राउ व्याकुल्ल धरणी॥ दियो राज भरतै बनै राम खेद्यो। यवानी मनो भूपही बाण छेद्यो ॥ पुनःधारिधीर्य्यापु हीमै बिचारी। पठाये चतुरचार औधै सुचारी ॥ गये दूत लाये समाचार सुन्तै। पयाना इतै भूप कीन्हें तुरन्तै ॥ न कीन्हें मगै बास आये प्रयागै। पठाये हमैं आजु प्रातै सुआगे ॥

दो० खबरि लेन पठये हमैं सो पाये मुनि नाथ।
देहु बिदा अब जाहिं हम नाये कहि अस माथ ॥
बोलि छ सात किरात तब दीन्हें करि तिन साथ।
चले दूत तिरहूतिपहिं नाय सुमुनि पद माथ ॥

आवत सुन्यो जनक नृप जबहीं। आगे चले लेन प्रभु तबहीं॥ पुरजन परिजन अनुज समेता। युत गुरु गुरजन कृपानिकेता॥ कामदगिरि जब दीख बिरागी। चल्यो प्रणाम करत रथत्यागी॥ पंथ जनित श्रम काहु न रेजा। मन प्रथमै रघुपति पहिं भेजा॥ आये निकट देखि अनुरागे। जहँ तहँ मिलन परस्पर लागे॥

हरिगीतिका छंद॥ लागे परस्पर मिलन सादर प्रेम परिपूरण हिये। मिथिलेश बंदे जाय मुनिजन ऋषिन प्रभु बंदन किये॥ पुनि राम सानुज जनक नृप पद पद्म शीश नवायऊ। भगवन्त मिलि अति प्रेम सबहिन शुभ सुआश्रम लायऊ॥ सवैया॥ बिलपैं द्वउ राज समाज मिले नहिं काहुहिं ज्ञान बिराग रहा। गुण रूप सुशील सराहि महीपति शोच सबै बश शोकमहा॥ दय दोष सरोष कहै सब कै यह बाम बिरञ्चि सुकीन कहा। भगवन्त सु देखि बिदेह दशा मुनि सिद्ध बिरक्तन धीर बहा॥

दो० तब सब लोगन मुनिवरन दीन्हें बहु उपदेश।
कह बशिष्ठ मिथिलाधिपहिं धीरज धरिय नरेश॥

सवैया॥ जाकर ज्ञान प्रभाकर ज्यों सु उदै भव घोर निशाहि नशाई। बैन समूह लसैं किरणैं शुकसे मुनि पद्म बिकासहिपाई॥ ताहिकि कौन्यहु कालकबौं ममता मद मोह सकै नियराई। त्यों भगवन्त अचर्य्य नहीं सिय राम सनेह कि है य बड़ाई॥ सिय राम सनेह मई ज्यहि देह सराहत ताहिं सदा सबके। भगवन्त सु साधु समाजनमें बड़ पावत भावत आदरस्वै॥ जप योग बिराग सुज्ञान जितो बिनु रामसनेह बृथा कृतज्वै। प्रण रोपि कहौं नहिं कामकई हरि प्रेम बिना हरिसों बड़है॥

दो० कोटि इन्द्र सम सुखसदन कोटि काम छवि देह।

कह भगवन्त सोतुच्छ सब बिनु सिय रामसनेह ॥
बहुतभाँति मिथिलाधिपहि कहिमुनि धीरजदीन।
रामघाट तब जायके सबहिन मज्जन कीन ॥
मुनि आयसु जहँतहँ सकल उतरे सुथल बिचारि।
त्यहि बासर बिनु बारिही रहे सुयों नर नारि ॥

होत प्रात सब लोग नहाने। कोलकिरात खबरि असजाने ॥
कंदमूल फल बिबिध प्रकारा। लावत भये अपारन भारा ॥

सवैया ॥ श्रीरघुबीर प्रताप कलाप सु पाय भयो बन मंगल दायक। दानि सबै मन काम भये गिरि देखत जो दुख जाल नशायक ॥ वृक्ष सबै फल फूल सराजत डोलत बाय सुभाय सुहायक। त्यों भगवन्त प्रभाव महाबन क्यों सुकहौं जहँ श्री रघुनायक ॥

दो० कन्दमूल फल सकल स्वइ सबहिं पठै मुनि दीन।
अर्पिअर्पि हरि हरि सुमिरि सबहिनभोजनकीन ॥

छप्पैछंद ॥ यहि बिधिगत दिन चारि निरखि रामहिं नरनारी। रहहिं सुखी सब काल सदन सुख सुरति बिसारी ॥ दुहुँ समाज रुचि यहै फिरब प्रभु बिनु भल नाहीं। सुरपुर कोटि सुपास राम सिय सँग बन माहीं ॥ तजि लषण राम सिय धामसुख भाव सदनसुख मन जिनहि। त्यहि सम न हानि जगजानि कछु बाम सकलबिधि बिधि तिनहि ॥ सवैया ॥ पूरब कर्म्म किये कछु नेक प्रभावहि सों तनु मानुष पायो। सो लहि जो नकरी हरिभक्ति वृथा बश मोह सु बैस बितायो ॥ छांड़ि सबै छलकाय गिरा मन जो नहिं राम सों नेह बढ़ायो। सोभगवन्त सु देखु बिचारि जिये जगनाहक नाहकजायो ॥ इन्द्रबज्राछंद ॥ ताही समय में सियजू कि माई। भेजी सुदासी यक तत्र आई ॥ सो देखि गैली सवकाश जानी। आईं सबै तत्रबी-

देह रानी ॥ श्रीराम मैया सनमानि बानी । दीन्हासनै लै समया समानी ॥ बैठीं सबै प्रेम गंभीर भीनी । बोली सुनैना बचनै प्रवीनी ॥ सुनैना सवैया ॥ वाम विरञ्चिकिहै बुधि वाम जु कोरत फेनहिं पय पविटाँकी। जन्म बिवाह उछाह कहां वह सुक्खमहा दय कीन अचाकी ॥ डारि कहां अब आनि दिये यह दुःख रहीगति एकन बाकी। जानिन जाय कहौं सुकहा भगवन्त सबै उलटीगति ताकी॥

दो० देखहु विषं बायस विपुल अमिय हंस यकनाम ।
तातें वहिविधि वामकी सबै अहैगति वाम ॥

सुमित्रा सवैया ॥ बिपरीत सबैविधिकी गति है सु विचित्र महा नहिं जानिपरे । लघुबालक ज्यों बुधि भोरिसदा रचि खेल बिगारत फेरितरे ॥ क्षणमें सृजि लोक अनेकनत्यों प्रतिपालनकै सु बहोरिहरै। भगवन्त स्वछन्द करै सबसों मनभावत काहुन नेकुडरै॥ कौशल्या कबित्त ॥ काहूको न दोष निज कर्महीको रोष सब अतिशै करालगति कर्मकी सुजानिकै। ताही अनुकूल बिधि चातुर सुदेत फल घटिना बढ़ाय दुख सुख लाभ हानिकै ॥ ईशाही रजाय शीशाज नियें सकलजीव शोचितेन बादि यों अनादि रीति मानिकै। शोचिये जु देविहित आपने कि हानि जानि जीवन मरण भूप बातहीय आनिकै ॥ सुनैना दोहा ॥

देबि सत्य बानीत्वया कसन कहौ असजानि ।
सुकृतकोश अवधेशबर तिनकी तुम पटरानि ॥

कौशल्या चौपाई ॥

राम लषण सिय काननजाहीं । सोभल सबहिं काल तिहुँ माहीं ॥
मोहिं भरत कर शोच बिशेखी । राम प्रेम मूरति उन देखी ॥
भरत सुभाउ शील गुण करणी । सकहिं न शेष सहसमुख बरणी ॥

जब तब असम्वहिं नृपतिबखान्यो। यहिकुल दीपभरत जियजान्यो॥

दो० जैसे कनक कसौटिका कसे खुलत गुणतासु।
तैसे समया पायकै पुरुष परखिये आसु॥
भरत सरिस भरतै भयो उपमा कतहुँ न एकु।
ऐसेहु दुख अवसरजु निज त्यागे नहीं बिबेकु॥
सुनि पुनीत सुबिनीत मृदु कौशल्याकी बानि।
प्रेम मगन बिह्वल परम भईं शिथिल सबरानि॥

तब धरिधीरं राम महतारी। बोली बचन प्रेम उरभारी॥
सुनहु देबि प्रिय जनक नरेशू। तुमहिं देइ किमि कउ उपदेशू॥
अवसर पाइ भूपसन बानी। कहब देबि निज ओर बखानी॥
भरत जाहिंबन लषण न जाहीं। परैठीक जो नृप मनमाहीं॥

कौशल्या सवैया॥ तौ भलि यत विचारि करौम्वहिं शोच बड़ो यक भारतहीको। गूढ़ सनेह अहै उनकेमन लागत मोहिं रहे नहिं नीको॥ त्यों भगवन्त सुसत्य कहौं मिथिलेशि तुम्हें निज भावत जीको। श्रीरघुबीर बिना भरतै सुख लागत लोकसबै मन फीको॥

सुमित्रा नराचिकाछंद॥हे श्रीबिदेह भामिनी॥गे दण्डद्वैकयामिनी॥
राम जननि तब कह्यो सप्रीती। अब थल जाहु रैनि बहुबीती॥
म्वहिं गति ईश कि भूप सहाई। ठनत न मन कछु और उपाई॥
सुनि सप्रेम कौशल्या बैना। बंदिचरण तब कह्यो सुनैना॥

सुनैना चामरछन्द॥ मोहिं सो उचितयों बिनय सुआपु स्वामिनी। रामचन्द्र मातु कौशलेश प्रीव भामिनी॥ स्वामिनै सुभाव यों सुनीचहूक आदरै। अग्नि धूम्र अद्रि ज्यों तृणादि शीश पै धरै॥ रावरे सुअंग योग बिश्व माहिंको दई। भानुकी सहायता कतौं सुदीप सोहई॥

दो० कर्म बचन मन छाँड़ि छल सेवक आपु नरेश।
देविसहायक रावरे गिरिजा शम्भु हमेश॥

नाराचछन्द॥ श्रीराम जाय काननै सवाँरि देवकाजहीं। बहोरि आय कारिहैं अडोल अवध राजही॥ नृदेव नाग पायकै सुराम बाहनै वलै। सुखी स्वछन्द बासिहैं समस्त आपनैथलै॥

दो० यह सब तिरहुतिराय सों याज्ञवल्क्य मुनि गाय।
हौं राख्यो सुनि मुनि बचन देवि वृथा नहिं जाय॥

असकहि पुनिपुनि पायँनलागी। सियहित विनयकीनअनुरागी॥
आयसु पाय सहित संग सीता। चली सराहत प्रेम पुनीता॥

दो० आयसुथल परिजन प्रियहि मिली सीय जसयोग।
तापस बेष बिलोकि सिय भये बिकल सब लोग॥

इत बशिष्ठ मुनि पाय निदेशू। आवत भये थलहि मिथिलेशू॥
सियहि बिलोकि लीन उरलाई। अति अनुराग न हृदय समाई॥
भये बिकल लोमश इवराया। उपज्यउ ज्ञान मिटी भ्रममाया॥
एक समय लोमश अभिलाषा। नर नारायण ते अस भाषा॥
देखन हम चाहत तव माया। सो दिखाय दीजै करि दाया॥
मुनि प्रगट्यो निज माया गाढ़ी। उमग्यो सिंधुचल्यो जल बाढ़ी॥
गई बूड़ि महि पावन पाथा। बूड़त तरत बहे मुनि नाथा॥
यहि विधि बहत प्रयागहिआयो। जहाँ अक्षयबट रहेउ सुहायो॥
जस जस बारिधि जल उपराता। तस तस वृक्ष सो बाढ़त जाता॥
बिकल चढ़े मुनि तापर धाई। तहाँ देखि अस कौतुक पाई॥
पत्ता पर यक बालक सोवत। सो भगवान चकित मुनि जोवत॥
ताकी मुनि अवलम्बन पावा। है कउ अपर धीर मन आवा॥
मिटी प्रलय पुनि बच्यो मुनीशा। हरि मायाहि नवायो शीशा॥